कल, आज और कल भी बहुपयोगी
विश्व स्नेह समाज
मासिक, वर्षः११, संयुक्तांकः०६ व १० जून-जुलाईः १२, इलाहाबाद

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.
साहित्य/भाषा परामर्शक
डॉ० दुर्गाशरण मिश्र, रोहतास, बिहार

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेल:vsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचना

01 पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

02 सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

सभी पद अवैतनिक है।

एक प्रतिः	रु0 10/–
वार्षिकः	रु0 110/–
पाँच वर्ष–	रु0 500/–
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–

अंदर पढ़िए

हादसे और घोटाले 06
डॉ० हितेश कुमार शर्मा

चोखा धंधा बन गई है राजनीति ...08

प्राण घातक ज़हर है–नशा 09
-रमेश कुमार शर्मा

विज्ञान और आध्यात्मिकता 10
-डॉ० गार्गी शरण मिश्र 'मराल'

संक्रमण काल के दौर में युवा शक्ति -कृष्ण कुमार यादव...............12

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग	04
अपनी बात	05
कविताएँ	28,29
हिन्दीतरभाषी रचनाकार	27
अध्यात्म	21
महिला रचनाकार	20
कहानीः किरया करम, कँटिली गलियाँ	16, 22
साहित्य समाचार–	7,10,14,15,18, 22,25,30,31
लघु कथाएँ	32
समीक्षाएँ	33,34

दृढ़ विश्वास से किया गया प्रत्येक कार्य अवश्य ही सफल होता है, इसमें तिल मात्र भी संदेह नहीं.

++++++++++++++++++++++++

दृढ़ विश्वास से मानस जलनिधि में ऐसी विलक्षण लहरों का प्रादुभाव होता है कि मन प्रसन्नता से भर जाता है, उसके सामने असम्भव विचार, संदिग्ध बातें विलीन हो जाती हैं और वास्तविक ध्येय की सिद्धि हो जाती है.

++++++++++++++++++++++++

मानव चिन्तनशील प्राणी है. उसका मन, शान्त कभी भी नहीं रहता. वह कुछ न कुछ कल्पनाएं स्वभावतः करता रहता है. ऐसे ही विचारों को मन के उद्‌गार कह सकते हैं.

++++++++++++++++++++++++

अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रहो, कर्तव्यों की अवहेलना करना, मुख्य ध्येय से च्युत होना है. कर्मशील बनो, कर्म से कभी पीछे न हटो, सफलता का यही रहस्य है.

++++++++++++++++++++++++

प्रत्येक शुभ कार्य में बाधाएं भी आती है, वैसे ही तुम्हारें कार्यो में बाधाएँ भी आ सकती है. उनकी परवाह न करके, उनका डटकर निर्भीकता से सामना करते हुए अपना कर्त्तव्य करते रहो. यदि घबराकर कर्त्तव्य से विमुख हुए तो समझो कि जीवन के वास्तविक लक्ष्य से पीछे हट गए.

++++++++++++++++++++++++

झूठ समाज का ऐसा खोखलापन है जिससे निर्मित तथ्य एक न एक दिन अवसान को प्राप्त हो जाता है. झूठ मानव का बड़ा दुर्गुण है इससे उसका पतन अवश्यम्भावी है. झूठ का पर्दाफाश होने पर व्यक्ति की स्थिति देखते ही बनती है.

++++++++++++++++++++++++

झूठ बोलने से झूठ बोलने वाले का आत्मिक पतन होता है. उसकी वाणी का कोई महत्व नहीं रहता.

++++++++++++++++++++++++

झूठ पर विश्वास करना भयंकर भूल है. हमें झूठ का बहिष्कार करके सत्य का अनुसरण करना चाहिए.

दाऊजी

आदाब अर्ज़ है

छोटे झगड़े पेट को, बड़े बटोरें ऐश।
राजगुरू लाठी रखे, मिले उसी को भैंस।

राम खुदा की ओट में, मन्दिर-मस्जिद ध्वस्त।
राजगुरू चै-चाशनी, चाहत समय परस्त।।

मुफत-मुफत के खेल में, छुपा कमीशन खूब।
राजगुरू बरगद कहां, घास दूब की दूब।।

मेम टहलने को चली, वक्ष समेटे डाग।
राजगुरु कुछ जल रहे, अपने अपने भाग।।

भाड़े का शिक्षक लिया, शिक्षक खेले दांव।
राजगुरू अब कर रहा, चारों खाने चित्त।।

खाना पीना ओढ़ना, जन्म जात आतंक।
ऐसा कुनबा राजगुरू, भारत भाल कलंक।।

अरबों के अफसर भये, खरबों खेवक खेल।
राजगुरू कुछ कहें तो, मार्ग हमारा जेल।।

बाग-बगीचे में वही, खट्टे मीठे बेर।
राजगुरू रैयत रसिक, साज थपोली फेर।।

आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर 'राजगुरू'
जबलपुर, म.प्र.

अपनी बात

विधायकों व सांसदों की आय में इतना इजाफा कैसे?

कई चुनावों से यह जानकारी मिल रही है कि जब कोई नेता चुनाव के लिए पर्चा दाखिल करता है तो जो सम्पत्ति वह दर्शाता है, उसकी आय बहुत कम होती है. लेकिन जब वह विधायक या सांसद बन बैठता है और पांच साल बाद दोबारा चुनाव के लिए पर्चा भरता है तब उसकी सम्पत्ति में तीन गुने से लेकर पांच गुने तक का इजाफा हुआ रहता है. आखिर इस आय का स्रोत क्या है? अधिकतर सांसदों व विधायकों को जिनको मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूं उनके पास आय के अन्य स्रोत भी नहीं है फिर भी इतना इजाफा कहां से हो गया? जिनके पास आय के अन्य स्रोत हैं भी उनके पास भी पहले आय स्रोत में वृद्धि का औसत वार्षिक दर ५ से १० प्रतिशत का था. मगर चुनाव जीतने के बाद उनका प्रतिशत ५ से पचास या १०० प्रतिशत वार्षिक हो गया. कैसे? और कहां से? क्या इस सम्बंध में चुनाव आयोग द्वारा कोई जानकारी मांगी जाती है कि यह अप्रत्याशित वृद्धि कैसे हो गई?

चुनाव आयोग के निर्देशानुसार नामांकन करने वाला व्यक्ति शपथ पत्र पर अपनी व अपने परिवार की संपत्ति दर्शाता है. ऊपर दिये गये वृद्धि प्रतिशत पिछले कई चुनावों में प्रत्याशियों द्वारा स्वयं भरे गये आंकड़ो के आधार पर है. इसमें उनके द्वारा कितनी सम्पत्ति का ब्योरा छुपाया गया है यह शामिल नहीं है. एक आम आदमी जब अपनी मेहनत से कमायी सम्पत्ति जब बैंक में जमा करता है अगर उसकी जमा राशि पचास हजार रुपये या उससे अधिक है तो उसे अपना पैन नंबर लिखना होता है. इस पर आयकर विभाग द्वारा जवाब भी मांगा जाता है कि यह राशि कहां से आयी. कोई जमीन, गाड़ी या कुछ अन्य सामान खरीदता है तो उससे आयकर विभाग हिसाब मांगता है यह पैसा कहां से आया. लेकिन नेताओं के लाखों, करोड़ों रुपये कहाँ से आये इसका हिसाब मांगने वाला कोई नहीं है. न तो आयकर विभाग और न हीं चुनाव आयोग. आखिर क्यों? आम आदमी और नेताओं में यह फर्क क्यों? इनके लिए नियम, कानून आदि आदि की धाराएं बदल जाती है.

मेरा सुझाव है कि पर्चा दाखिल करते समय प्रत्याशियों द्वारा जो आय दर्शायी जाती है, उसकी भी जांच होनी चाहिए. दर्शायी गयी आय के ब्योरे की एक प्रति आयकर विभाग को भेजी जानी चाहिए, जिससे वो जांच कर सके. इसके श्रोत के बारे में और आयकर विभाग इस कर की देनदारियाँ सुनिश्चित कर सके.

दूसरा सवाल क्या चुनाव आयोग इस आय के स्रोत को पता लगाने के लिए आयकर विभाग को लिखता है या लिख सकता है? अगर आयोग ऐसा करने का अधिकार न हो तो इसे शामिल किया जाना चाहिए. जो भ्रष्टाचार को रोकने, काला धन को बाहर निकालने व निष्पक्ष चुनाव में एक अहम कड़ी साबित हो सकती है. इसके बहुत ही दूरगामी परिणाम निकलेंगे.

उपर्युक्त सुझाव राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, मुख्य चुनाव आयुक्त को पत्र के माध्यम से भेजा जा चुका है.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मुद्दा

हादसे और घोटाले

जब से घोटाले बढ़े हैं तब से हादसे भी बढ़ गये हैं; क्योंकि हादसे घोटालों पर पर्दा डालने के काम आते हैं. यदि हादसे नहीं होंगे तो जनता का ध्यान घोटालों पर ही लगा रहेगा.

सत्तासीन व्यक्ति अपने कार्यकाल में कितने ही घोटाले क्यों न कर ले सब कुछ जानते हुए भी जब वह पांच साल बाद वोट मांगने के लिए हाथ जोड़कर आता है तो जनता पुनः उसी को वोट दे देती है. जनता को यह गाना पसन्द हैः ऐ दिले आवारा चल/फिर वही दोबारा चल।

✍डॉ० हितेश कुमार शर्मा,
बिजनौर, उ.प्र.

भारत वर्ष में जब से घोटाले बढ़े हैं तब से हादसे भी बढ़ गये हैं क्योंकि हादसे घोटालों के ऊपर पर्दा डालने के काम आते हैं. जहां पर सत्ता में अधिकतर व्यक्ति घोटालों में लिप्त हैं तब घोटालों की तरफ से जनता का ध्यान हटाने के लिए हादसों का होना आवश्यक है. क्योंकि यदि हादसे नहीं होंगे तो जनता का ध्यान घोटालों पर ही लगा रहेगा और वह घोटालों को लेकर सरकार के खिलाफ नारेबाजी, आन्दोलन जारी रखेगी. हालांकि सरकार का इन आन्दोलनों से कुछ नहीं बिगड़ता क्योंकि भारत की जनता अहिंसक है और अपराधी को माफ करने की भावना मन में रहती है. इसलिए सत्तासीन व्यक्ति अपने पांच साल के कार्यकाल में कितने ही घोटाले क्यों न कर ले, कितना ही काला धन क्यों न एकत्र कर ले, कितनी ही बार स्विटजरलैण्ड जाकर काले धन को ठिकाने न लगा आये. जनता सब कुछ जानते हुए भी जब वह पांच साल बाद पुनः वोट मांगने के लिए हाथ जोड़कर माफी मांगता हुआ आता है तो जनता पुनः उसी को वोट दे देती है. क्योंकि जनता को यह फिल्मी गाना पसन्द है.

ऐ दिले आवारा चल/फिर वहीं दोबारा चल।

इसीलिए वही सत्तासीन व्यक्ति जिसने अरबों के घोटाले कियें हों, जिसका सारा परिवार घोटालों में लिप्त है, जिसने प्रजातंत्र को परिवार तंत्र बना दिया है. वह फिर सत्तासीन हो जाता है और जनता उसे क्षमा करके पुनः अपना भाग्य विधाता बना देती है. है ना भारत की जनता शीघ्र क्षमा करने की भावना रखने वाली यही कारण है कि सत्तासीन व्यक्ति घोटाले-दर-घोटाले करते हैं अरबों रुपया स्विस बैंको में भेज देते हैं फिर भी जनता की नजरों में उसके प्रिय बने रहते हैं. कभी-कभी कुछ ऐसे कार्य अवश्यक कर देते हैं, जिससे जनता का ध्यान घोटालों से हट जाए.

बाढ़ आ रही है. नदियां यदि गहरी कर दी जाएं तो बाढ़ नहीं आयेगी. प्रत्येक वर्ष गंगा की सफाई और गहरा करने के लिए करोड़ों रुपया आबंटित होता है और वह न जाने किस गहराई में समा जाता है. गंगा आज तक गहरी नहीं हुई. उथली नदी में बाढ़ अधिक आती है क्योंकि वह किनारे तोड़कर बहती है. और आसपास के गांव को अपनी चपेट में ले लेती है. बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में राहत कार्य के लिए करोड़ों रुपया आवंटित होता है इसमें भी घोटाला हो जाता है. जिनको राहत चाहिए उनको राहत नहीं मिलती और सारी राहत उनके काम आ जाती है, जो पहले से करोड़ो और अरबों डकार चुके हैं. बाढ़ रोकने के नाम पर छोटे-मोटे प्रयास होते हैं, जिससे प्रयास भी दिखाई दें और बाढ़ भी आती रहे. किसी शायर ने कहा है-

दाव भी चलती रहे, उड़ती रहे भुसियार भी।/यार भी राजी रहे, राजी रहे सरकार भी।

अर्थात् प्रयास यह होता है कि राहत भी होती दिखाई दे और बाढ़ आनी भी न रूके क्योंकि बाढ़ आने से दो फायदे हैं. पहला जब बाढ़ आती है तो बाढ़ राहत कोष करोड़ो में आवंटित होता है और पानी में डूब जाता है. जब बाढ़ उतरती है तो किनारे खड़ी सैकड़ों बीघे जमीन की फसल नष्ट हो जाती है. अतः सूखे की स्थिति आ जाती है और फिर सूखा राहत कोष आबंटित होता है और वह भी सूखे भूसे की तरह उड़ जाता है. है ना सरकारी खेल कमाल का. बाढ़ राहत का भी चर्चा होता है, लेकिन पैसा सब स्विस बैंक में चला जाता है. हमारी बचत करने की आदत सर्वश्रेष्ठ है.

केवल एक कार्य होता है कि नदियाँ गहरी कर दी जाती तो न तो बाढ़ आती और सूखा पड़ता और न घोटाले होते. तब जनता का पूरा ध्यान उन

अरबों, खरबों के घोटाले की तरफ होता, जो इन हादसों की आड़ में जनता की नजर से बचकर निकल जाते है. कभी जनता बाढ़ में डूबती है. कभी जनता सूखे से मरती है लेकिन घोटालों से ध्यान बंटा रहता है और यही सरकार चाहती है कि जनता का ध्यान घोटालों पर न जाए.

स्वास्थ्य विभाग में कई हजार करोड़ का घोटाला हुआ. कोई भी अधिकारी इतना बड़ा घोटाला अकेले नहीं कर सकता. इसमें सत्तासीन व्यक्ति भी शामिल होते हैं और सत्तासीन व्यक्तियों की तरफ से ध्यान हटाने के लिए हादसा आवश्यक है. इसीलिए डाक्टर सचान की हत्या हो गई और जनता का ध्यान डॉक्टर सचान की हत्या की ओर मुड़ गया. हत्या के पीछे जो घोटाला था उस ओर ध्यान हट गया. अब पूरे देश की जनता इस चक्कर में लगी हुई है कि डाक्टर सचान की हत्या कैसे हुई सब यह भूल गये कि स्वास्थ्य विभाग में जो हजारों का घोटाला हुआ था उसमें कौन-कौन से नेता और अफसर संलिप्त थे. यदि डाक्टर सचान की हत्या न होती तो इस घोटाले का भेद खुल सकता था. इसलिए यह हादसा आवश्यक हो गया था.

यही स्थिति रेलों की है, रेलों में हादसे बराबर होते रहने चाहिए क्योंकि रेलों के हादसे में बहुत से लोगों की मौत होती है, बहुत से लोग जख्मी होते हैं उनको लाखों रुपयों का मुआवजा दिया जाता है. जो जनता का बड़े-बड़े घोटालों की तरफ से ध्यान हटाने के लिए आवश्यक है. अंग्रेजों के जमाने में बिछायी गई पटरियां न मरम्मत होती है न उनकी सही देखभाल होती है. मैं लखनऊ से लौट रहा था तो कई जगह पर मैंने रेल की पटरियों के ज्वाइंट में छह के स्थान दो ही वोल्ट खीचे हुए पाए. कई जगह जो क्लिप लगे होते हैं वह हटे हुए थे. पटरियां व सिग्नल के तार घिस गए हैं. क्योंकि हर चीज की एक उम्र होती है. हादसा अवश्यंभावी है तथा हादसे में मृत्यु होनी ही है और घायलों की गिनती भी बढ़ती ही जाती है. जनता घोटाले भूलकर हादसों में लिप्त हो जाती है. क्योंकि भारतवर्ष की जनता का हृदय जल्दी द्रवित होता है. खुशी हो या गम आंसू आने आवश्यक हो जाते है और एक रोने वाले व्यक्ति को घोटाले का ध्यान न आना स्वाभाविक है.

पुल बनते हैं, सड़के बनती हैं, विकास कार्य होता है किन्तु कोई-कोई पुल पहली बरसात भी नहीं झेल पाता, कोई-कोई इमारत बनते-बनते ढह जाती है और सड़कों का तो बुरा हाल है. नई बनी हुई सड़क एक वर्ष भी पूरा नहीं कर पाती कि उसमें इतने गड्ढे हो जाते हैं कि प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार एक गड्ढे से बचो तो दस गडढ़े सामने आएं. जनता इन पुलों व इन सड़कों से हुए हादसों में व्यस्त हो जाती है और राजनेता इस बीच में स्विटजरलैण्ड का चक्कर लगा आते हैं. अखवार वाले यही देखते रह जाते हैं कि कौन-सा नेता किस हवाई जहाज से किस देश को गया और वहां से किस प्रकार स्विटजरलैण्ड पहुंच गया. घोटालों की तरफ से उनका ध्यान हट जाता है.

हादसे एक प्रकार से घोटालों के विपरीत दर्द निवारक औषधि का कार्य करते हैं. जिस प्रकार दर्द निवारक औषधि को खाकर व्यक्ति अपना दर्द भूल जाता है उसी प्रकार हादसों से प्रभावित जनता घोटालों को भूल जाती है. अतः सत्ता के हित में हादसे अत्यन्त आवश्यक है ताकि सत्तासीन व्यक्तियों के घोटालों पर कोई ध्यान न दे सके. हादसों में यदि कुछ लोग मरते हैं तो सत्ता पर कुछ अन्तर नहीं पड़ता. सौ-पचास वोट कम होने से चुनाव नहीं टला करते और न ही चयनित व्यक्ति का भाग्य प्रभावित होता है. शायद ईश्वर भी यही चाहता है वह सत्तासीन व्यक्तियों के पूर्व जन्म के सत्कर्मो के विरुद्ध उन्हें घोटाला करने की छूट और घोटालों पर पर्दा डालने के लिए हादसों की छूट प्रदान कर रहा है. धन्य है भारत की जनता और धन्य है अपना देश।

आवश्यक सूचना

जून-२०१२ को प्रकाशित होने वाला डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक व्यक्तित्व' विशेषांक उनके पिता के निधन के कारण स्थगित कर दिया गया है. अब यह विशेषांक जून २०१३ में प्रकाशित होगा. जिन साहित्यकारों बन्धुओं/मित्रों को इस विशेषांक के संदर्भ में अपने विचार/शुभकामना संदेश/कविताएँ/चित्र भेजने हैं वे ३० मार्च २०१३ तक संपादकीय कार्यालय के पते पर प्रेषित कर सकते हैं.

ईश्वर शरण शुक्ल, अतिथि सम्पादक

मुद्दा

चोखा धंधा बन गई है राजनीति

जनता गरीब होती जाती है और सेवक बना नेता लगातार अमीर होता जाता है.

आज राजनीति चोखा धंधा बन गई है, और जनसेवा छद्म हो गई है.

संसद में २५ प्रतिशत ऐसे व्यक्ति पहुंच गए है, जो उद्योगपति, व्यवसायी और बिल्डर हैं. ये जनसेवा कम संसद में पूंजी बढ़ाने को पहुंचे हैं. उनकी संख्या १२८ है.

समाज प्रवाह, मुंबई

नेतागिरी भारत में रातों-रात अमीर होने का जादुई चिराग बन गयी है. यहां हर छोटा बड़ा नेता लक्ष्मी से वरदान पा जाता है. ये जनसेवक कहलाते हैं. सेवा का दंभ भरते हैं और जब भी जनता की सेवा का अवसर आता है, तो जनता ही हालत सुधरने की बजाय बिगड़ती जाती है. जनता गरीब होती जाती है और सेवक बना नेता लगातार अमीर होता जाता है.

अपने यहां नेतागिरी के छोटे-बड़े पद से लेकर सांसद व मंत्री तक सभी में धन बटोरने का गुण और क्षमता अपने आप आ जाती है. राष्ट्रीय परिदृश्य में जनता लगातार गरीब होती जा रही है. गरीबों की संख्या बढ़ रही है, जबकि सेवक बने नेता, विधायक व सांसदों की पूंजी अकूत बढ़ती जा रही है. लोकतंत्र के छोटे उदाहरण ग्राम पंचायत से लेकर संसद तक ही यही स्थिति है. हालात यह है कि आज राजनीति चोखा धंधा बन गई है, जहां जनसेवा छद्म हो गई है और धन बटोरना प्राथमिकी है.

संसद् की वर्तमान स्थिति देखें तो यहां २५ प्रतिशत ऐसे व्यक्ति पहुंच गए है, जो उद्योगपति, व्यवसायी और बिल्डर हैं. ये जनसेवक का दिखावटी आवरण ओढ़ कर अपनी पूंजी बढ़ाने संसद पहुंचे हैं. उनकी संख्या १२८ है. राज्यसभा में भी दस प्रतिशत अर्थात २५ ऐसे व्यक्ति सदस्य बन कर पहुंच गए हैं. पांच साल की छोटी अवधि में अपने सांसदों की मूल पूंजी अपने आप हजारों गुना बढ़ गयी है. विजयवाड़ा के सांसद राजगोपाल ऐसे व्यक्ति हैं, जिनकी मूल संपत्ति पांच साल के भीतर जनता की सेवा करते-करते रिकार्ड २०२४ गुना बढ़ गयी है. यह जादुई चिराग हासिल होना नहीं, तो और क्या है?

संसद के दोनों सदनों में जमकर धनवर्षा हो रही है. इनकी रईसी में सतत इजाफा हो रहा है. इन सांसदों की पूंजी आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ती हैं. ये आम आदमी के स्वप्नों को साकार करने के मसूबे से संसद पहुंचते है, जनसेवक कहलाते हैं और लक्ष्मी पुत्र बन जाते हैं.

जनसेवक की आड़ में धनपति बनने में किसी भी पार्टी का सांसद पीछे नहीं है. कांग्रेस, भाजपा, सपा, बसपा, जद एस., जदयू, डीएमके आदि सभी दलों के सांसदों की यही हालत हैं. पशु प्रेमी मेनका की पूंजी पांच वर्षो के दौरान १७८.५ प्रतिशत बढ़ गई. यह पूंजीवर्धन राजनीति में रहकर जनता की सेवा करते-करते हो गया. दुनिया के किसी व्यवसाय में इस भांति तेज गति के साथ पूंजी वृद्धि संभव नही हैं.

इन नेताओं की अनदेखी के कारण ही आज देश में आम जनता की स्थिति लगातार खराब हो रही है. इन नेताओं की करतूतों के कारण ही देश की एक तिहाई आबादी गरीब और महागरीब हो चुकी है, जिन्हें एक समय भी भरपेट भोजन नसीब नहीं हैं. यहां गरीबी और गरीबों की संख्या लगातार बढ़ रही है. कुपोषण यहां के नौनिहालों को निगल रहा है.

बचपन भी अपना पेट भरने और श्रम करने में जुटा है. साफ पानी, भोजन, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली आदि जैसी मुलभूत सुविधाएं भी उन्हें मयस्सर नहीं है. १५ लाख बच्चे सालाना साधारण-सी बीमारी के कारण मरते जा रहे हैं. यहां की एक तिहाई आबादी को साधारण साफ पानी तक नसीब नहीं हैं. ५५ प्रतिशत लोग ट्यूबवेल से निकले अस्वच्छ पानी को गटक रहे हैं. शहर में ६प्रतिशत लोगों के पास तो कोई भी जल श्रोत नहीं हैं. भयानक भुखमरी की स्थिति गांव से लेकर शहर तक हैं.

मनमोहन सिंह जैसे अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री एवं शरद पवार जैसे उद्योगपति, व्यापारी प्रेमी केन्द्रीय कृषि मंत्री के कारण हर चीज महंगी होती जा रही है. मनमोहन सिंह जनता की सोचते और पूंजीपतियों के हित में कदम उठाते हैं. पवार हर चीज को सटटे में लगा रहे हैं, और देश की जनता का हर दृष्टि से बारह बजाने पर तुले हैं. ४० से ५० प्रतिशत किसान खेती से तौबा कर रहे हैं. अमीरी-गरीबी की खाई गहराती जा रही है. भ्रष्टाचार अनिवार्य बन गया है, जो हर व्यवस्था को निगल रहा है. स्थिति यहां तक

प्राणघातक ज़हर है-नशा

सरकारें अनेकों नीतियॉ ंतो बनाती हैं, उसे लागू भी करती हैं, परन्तु उन्हें लागू कर पाने में असमर्थ हो जाती हैं.

नशे के ख़िलाफ़ पूरे विश्व के लोगों को एकजुट होकर एक स्वर से आवाज उठाना होगा. नशे का व्यापार करने वालों के ख़िलाफ़ सख्त से सख्त प्रतिबन्ध लगाना चाहिए. देश की ताकत हैं युवा नशे में मस्त हैं. इनको सुधारने के लिए सामाजिक संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए.

✍ रमेश कुमार शर्मा, इलाहाबाद, उ.प्र.

मानव जीवन के लिए नशा एक ज़हर है, फिर भी समाज के हर तबके के लोगों में बड़े ही शौक से परोसा जा रहा है. प्राचीन काल से ही राजा-महाराजा, साधु-सन्यासी इस बुरी लत के शिकार रहे हैं, जो इतिहास के पन्नों को पलटने से पता चलता है. आज पूरे विश्व में नशे की समस्या एक अभिशाप के रूप में मुँह बाए खड़ी है, जिससे निपटने के लिए हर देश अपनी आमदनी का कुछ न कुछ हिस्सा इसके रोक-थाम के लिए खर्च कर रहा है. विश्व का सबसे ताक़तवर कहा जाने वाला देश अमेरिका की हालत तो नशे के कारण और भी दयनीय है तो वहीं पाकिस्तान के किशोरों में हेरोइन के नशे की प्रवृत्ति अपनाने की बाबत बात सामने आती है. जहाँ तक भारत का सवाल है, स्वतंत्रता के बाद नशा मुक्ति पर लगाम लगाने के लिए अनेकों नीतियाँ बनाई गयीं. इन्हीं नीतियों के तहत १ से ३ दिसम्बर १९९१ में इण्डियन चैम्बर आफ कामर्स, कलकत्ता द्वारा नशा मुक्ति हेतु एक अन्तरराष्ट्रीय समारोह का आयोजन किया गया. इस अर्न्तराष्ट्रीय समारोह में भारतीय महिला आई०पी०एस० अधिकारी किरन बेदी ने भी नशा मुक्त समाज की स्थापना के लिए नशे के ख़िलाफ़ व्यापक अभियान चलाने की वकालत की थीं।

आन्ध्र प्रदेश में १९९२ में अड़क (कच्ची शराब) के विरूद्ध आन्दोलन नेलोर जिले से प्रारम्भ होकर अन्य जिलों में फैलने लगा, को संज्ञान में लेते हुए जनवरी १९९५ में पूरे राज्य में नशाबन्दी कानून लागू किया गया, परन्तु इससे १ वर्ष में ही करीब १२०० करोड़ रूपये का राज्य सरकार को नुकसान हुआ. इस नुकसान को देखते हुए मार्च १९९७ में नशाबन्दी कानून समाप्त कर दिया गया. तमिलनाडु, केरल एवं हरियाणा में भी नशाबन्दी कानून लागू किया गया, परन्तु आर्थिक नुकसान के साथ-साथ राजनीतिक नफा-नुकसान को देखते हुए इसे समाप्त कर दिया गया. **कहने का तात्पर्य** यह है कि सरकारें नीतियॉ ंतो बनाती हैं, परन्तु उन्हें गम्भीर रूप से लागू कर पाने में असमर्थ होती हैं.

वर्तमान परिवेश में आवश्यकता इस बात की है कि नशे के ख़िलाफ़ पूरे विश्व के लोगों को एक जुट होकर एक स्वर में स्वर मिलाना होगा. जो देश अपने निजी स्वार्थों के चलते नशे का व्यापार करते हैं, उनके ख़िलाफ़ सख्त से सख्त प्रतिबन्ध लगाने की आवश्यकता है. इसी प्रकार प्रत्येक देश अपने राज्य सरकारों पर भी नशे के विरूद्ध कठोर नीतियाँ बना कर उन्हें पालन करावें.

आज सबसे ज्यादा चुनौती युवाओं में नशे की बीमारी से लड़ने की है, युवा देश की ताक़त हैं. नशे की हालत में व्यक्ति की सोच अपराधी प्रवृत्ति की हो जाती है, जो देश की सभ्यता एवं संस्कृति को समूल नष्ट कर देती है, जिससे देश का विकास बिल्कुल ही अवरूद्ध हो जाता है. इसलिए यदि हम देश की सभ्यता एवं संस्कृति को बचाना चाहते हैं तो इस सामाजिक बुराई पर विजय पाना होगा। इसके लिए राज्य स्तर के साथ समाज सेवी संस्थाओं एवं देश के सभी नागरिकों को अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझते हुए इसका प्रतिरोध करना होगा। क्योंकि नशा मानव समाज के लिए एक प्राण-घातक ज़हर है। समय रहते यदि इस पर काबू नहीं पाया गया तो यह सम्पूर्ण विश्व के लिए चुनौती बन जायेगा। इसके लिए संयुक्त आक्रमण की नितान्त आवश्यकता है। **आइये!** आने वाले नशा मुक्ति दिवस के अवसर पर हमस सब एक जुट होकर नशा मुक्त समाज की स्थापना हेतु दृढ़ संकल्प लें।

पहुंच चुकी हैकि देश के ११.५करोड़ करोड़ परिवार अर्थात् ५५ करोड़ लोग गरीब के साथ संघर्ष कर रहे हैं, जिन्हें एक समय भी भरपेट भोजन नसीब नहीं हैं.

देश अमीरों के इंडिया और गरीबों के भारत में बंट गया हैं. न किसान सुखी है न ग्रामोद्योग बचे हैं, न गांव स्वावलंबी बन पाये. जनता हर जगह दूसरों के रहमोकरम पर है. किसान न खेती कर सकता है, न अपनी उपज का मूल्य तय कर सकता है. पूंजीपति, उद्योगपति और कंपनियां सब कुछ कर सकती है. आम लोग तो कीड़े-मकोड़े हो गए हैं, जिन्हें हर कोई रहा है.

मुद्दा

विज्ञान और आध्यात्मिकता

विज्ञान बाह्य जगत् का, तो आध्यात्मिकता आंतरिक जगत् का, विज्ञान जहां एकता में अनेकता का दर्शन कराता है तो आध्यात्मिकता अनेकता में एकता का. विज्ञान भौतिक सत्य को खोजता है तो आध्यात्मिका अंतिम सत्य को. एक की दृष्टि व्यष्टिवादी है दूसरे की समष्टिवादी.

✍ **डॉ० गार्गी शरण मिश्र** 'मराल', जबलपुर, म.प्र.

प्राकृतिक घटनाक्रम का अवलोकन एवं वर्गीकरण विज्ञान है तो जीव-जगदीश्वर, धर्म और अधर्म का विवेचन आध्यात्मिकता है. विज्ञान बाह्य जगत का अध्येता है तो आध्यात्मिकता आंतरिक जगत् का अध्ययन करती है. विज्ञान जहां एकता में अनेकता का दर्शन कराता है वहां आध्यात्मिकता अनेकता में एकता का दर्शन कराती है. विज्ञान भौतिक सत्य को खोजता है तो आध्यात्मिका अंतिम सत्य को खोजती है. एक की दृष्टि व्यष्टिवादी है दूसरे की समष्टिवादी. अतः हम कह सकते हैं कि विज्ञान और आध्यात्मिकता एक ही ज्ञान रेखा के दो छोटे हैं.

दोनों का लक्ष्य सत्य का अन्वेषण एवं मानव कल्याण है. फिर भी एक ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है दूसरा उसे स्वीकार नहीं करता. एक आस्था और विश्वास पर आधारित है दूसरा प्रयोग और प्रमाण पर. इसीलिए जहां अध्यात्मिकता मन का विषय है वहां विज्ञान बुद्धि का.

परमाणु विखंडन से विसर्जित होने वाली अनंत ऊर्जा को आधार मानकर आधुनिक विज्ञान यह स्वीकार करता है कि संपूर्ण ब्रह्मांड ऊर्जा से निर्मित है. दूसरे शब्दों में आधुनिक विज्ञान आण्विक शक्ति को समस्त जगत और जीव का आधार स्वीकारते हुए उनके जन्म, विकास और क्षय का कारण मानता है. जबकि महात्मा गांधी इस संसार को बनाने, पालने और मिटाने वाली शक्ति को ईश्वर मानते हैं. इससे सिद्ध होता है कि आधुनिक विज्ञान की आण्विक शक्ति और महात्मा गांधी की संसार को बनाने, पालने और मिटाने वाली शक्ति में कोई अंतर नहीं है. तात्पर्य यह कि आधुनिक विज्ञान भी अब आण्विक शक्ति के रूप में ईश्वर को स्वीकार कर रहा है क्योंकि आध्यात्मिकता जिसे ईश्वर कहती है. आधुनिक विद्वान उसे आण्विक शक्ति कहकर अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार करता है.

निर्गुण निराकार शक्ति सगुण साकार होकर अनेक रूप धारण कर सकती है. इसे बिजली के उदाहरण से भली भांति समझा जा सकता है. बिजली एक निर्गुण निराकार शक्ति होते हुए भी पंखे के रूप में हवा देने का काम, रेडियों के रूप में गायन-वादन सुनाने का काम, फ्रिज के रूप में वस्तुओं को ठंडा करने का काम, हीटर के रूप में वस्तुओं को गर्म करने का काम, बल्व के रूप में प्रकाश देने का काम, टीवी के रूप में देश-विदेश के चित्र दिखाने का काम करते हुए अनेक रूप धारण करती है. उसी प्रकार परमात्मा निर्गुण-निराकार से सगुण साकार होकर अगणित रूप धारण करता है. इस प्रकार आधुनिक विज्ञान और आध्यात्मिकता समान रूप से अंतिम सत्य के रूप में आदि शक्ति या परमात्मा को स्वीकार करते हैं. अतः दोनों को परस्पर विरोधी नहीं सहयोगी बनकर काम करना चाहिए. एक विश्व प्रेम और विश्वशांति का आधार बने तो दूसरा गरीबी उन्मूलन और उदरपूर्ति का. तभी मानवता का कल्याण होगा. इसीलिए विश्व के महान वैज्ञानिक आईंस्टीन ने कहा था 'ज्ञान (आध यात्मिकता) के बिना विज्ञान अंधा है और विज्ञान के बिना ज्ञान (आध यात्मिकता) लंगड़ा.

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पांच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएंगें. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- २११०११, उ.प्र. के पते पर ३० नवम्बर २०१२ तक भेजना होगा.

उत्तर प्रदेश में बिजली संयोजित भार की संगणना विधि

विद्युत भार बढ़ाने के लिए देय प्रभार

क्र.सं.	श्रेणी	सिक्योरिटी रु०
१.	घरेलू बत्ती एवं पंखा	३००/कि.वा.
२.	निजी नलकूप	३००/कि.वा.
३.	वाणिज्यि बत्ती एवं पंखा	८००/कि.वा.

भार वृद्धि सिस्टम लोडिग शुल्क तालिका

भार जो बढ़ाना है	सिस्टम लोडिग चार्जेज(रु०)	भार जो बढ़ाना है	सिस्टम लोडिंग चार्जेज (रु०)
१ से २ किलोवाट	२५०	२ से ४ किलोवाट	४००
१ से ३ किलोवाट	४५०	२ से ५ किलोवाट	११००
१ से ४ किलोवाट	६५०	३ से ४ किलोवाट	२००
१ से ५ किलोवाट	१३५०	३ से ५ किलोवाट	६००
२ से ३ किलोवाट	२००	४ से ५ किलोवाट	७००

पांच किलोवाट व पांच कि.वा. से पचास कि.वा. तक-रु० ३००/कि.वा.

सर्विस लाइन- इसके लिए केविल एवं डिस्ट्रिब्यूशन वोर्ड आदि की व्यवस्था उपभोक्ता स्वयं करेगा।

मीटर- यदि बढ़े हुए भार के अनुसार मीटर बदला जाना है तो मीटर का मूल्य उपभोक्ता को जमा करना होगा।

मीटर का मूल्य- १. सिंगल फेज स्टेटिक मीटर रु० १०००.००
२. तीन फेज स्टैटिक मीटर रु० ५०००.००
३. स्टेटिक ट्राइवैक्टर मीटर रु० १२०००.००

कुल विद्युत भार (बढ़े हुए भार को सम्मिलित करते हुए) ४ कि.वा. तक होने पर मीटर का मूल्य देय नहीं है,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा जनहित में जारी

गुजारिश

१. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़ें, बल्कि दूसरों को भी इससे परिचित कराएँ.

२. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएँ भेजें. उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएँ पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुईं या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर मौलिकता व उनके अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जवाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.

३. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजने. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.

४. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.

५.जो रचनाएँ आपको अच्छी लगें उस बाबत रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.

६. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें.

७. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक रचनात्मक क्रांति लाने की माध्यम है. इसे हर सम्भव सहयागे प्रदान करें.

❑संपादक

संक्रमण काल के दौर में युवा शक्ति

युवा शब्द अपने आप में ही ऊर्जा और आन्दोलन का प्रतीक है. युवा राष्ट्र की नींव तो नहीं, लेकिन दीवार अवश्य है. जब तक यह ऊर्जा और आन्दोलन सकारात्मक रूप में है तब तक तो ठीक है, पर ज्यों ही इसका नकारात्मक रूप में इस्तेमाल होने लगता है वह विध्वंसात्मक बन जाती है. ऐसे में यह जरूरी है कि युवा ऊर्जा का सकारात्मक इस्तेमाल किया जाए.

✍ **कृष्ण कुमार यादव,**
निदेशक, डाक सेवा, इलाहाबाद

युवा किसी भी समाज और राष्ट्र के कर्णधार है, वे उसके भावी निर्माता है. चाहे वह नेता या शासक के रूप में हो, चाहे डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, साहित्यकार व कलाकार के रूप में हो. इन सभी रूपों में उनके ऊपर अपनी सभ्यता, संस्कृति, कला एवम् ज्ञान की परम्पराओं को मानवीय संवेदनाओं के साथ आगे ले जाने का गहरा दायित्व होता है. पर इसके विपरित अगर वही युवा वर्ग उन परम्परागत विरासतों का वाहक बनने से इन्कार कर दें तो निश्चितत: किसी भी राष्ट्र का भविष्य खतरे में पड़ सकता है.

युवा शब्द अपने आप में ही ऊर्जा और आन्दोलन का प्रतीक है. युवा को किसी राष्ट्र की नींव तो नहीं कहा जा सकता पर यह वह दीवार अवश्य है जिस पर राष्ट्र की भावी छतों को सम्हालने का दायित्व है. भारत की कुल आबादी में युवाओं की हिस्सेदारी करीब ५० प्रतिशत है जो कि विश्व के अन्य देशों के मुकाबले काफी है. इस युवा शक्ति का सम्पूर्ण दोहन सुनिश्चित करने की चुनौती इस समय सबसे बड़ी है. जब तक यह ऊर्जा और आन्दोलन सकारात्मक रूप में है तब तक तो ठीक है, पर ज्यों ही इसका नकारात्मक रूप में इस्तेमाल होने लगता है वह विध्वंसात्मक बन जाती है. ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि आखिर किन कारणों से युवा उर्जा का सकारात्मक इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है? वस्तुत: इसके पीछे जहॉ एक ओर अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों से दूर हटना है, वहीं दूसरी तरफ हमारी शिक्षा व्यवस्था का भी दोष है. इन सब के बीच आज का युवा अपने को असुरक्षित महसूस करता है, फलस्वरूप वह शार्ट कट तरीकों से लम्बी दूरी की दौड़ लगाना चाहता है. जीवन के सारे मूल्यों के उपर उसे अर्थ ही भारी नजर आता है. इसके अलावा समाज में नायको के बदलते प्रतिमान ने भी युवाओं के भटकाव में कोई कसर नहीं छोड़ी है. फिल्मी परदे और अपराध की दुनिया के नायकों की भांति वह रातो-रात उस शोहरत और मंजिल को पा लेना चाहता है, जो सिर्फ एक मृगतृष्णा है. ऐसे में एक तो उम्र का दोष, उस पर व्यवस्था की विसंगतियॉ, सार्वजनिक जीवन में आदर्श नेतृत्व का अभाव एवम् नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन ये सारी बातें मिलकर युवाओं को कुण्ठाग्रस्त एवम् भटकाव की ओर ले जाती है, नतीजन-अपराध, शोषण, आतंकवाद, अशिक्षा, बेरोजगारी एवम् भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ जन्म लेती है.

भारतीय संस्कृति ने समग्र विश्व को धर्म, कर्म, त्याग, ज्ञान, सदाचार

सामाजिक मूल्यों के रक्षार्थ वर्णाश्रम व्यवस्था, संयुक्त परिवार, पुरुषार्थ एवम् गुरूकुल प्रणाली की नींव रक्खी. भारतीय संस्कृति की एक अन्य विशेषता समन्वय व सौहार्द्र रहा है, जबकि अन्य संस्कृतियॉं आत्म केन्द्रित रही है. इसी कारण भारतीय दर्शन आत्मदर्शन के साथ-साथ परमात्मा दर्शन की भी मीमांसा करते हैं. अंग्रेजी शासन व्यवस्था एवम् उसके पश्चात हुए औद्योगिकरण, नगरीकरण और अन्ततः पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव ने भारतीय संस्कृति पर काफी प्रभाव डाला. निश्चितत: इन सबका असर युवा वर्ग पर भी पड़ा है. आर्थिक उदारीकरण और भूमण्डलीकरण के बाद तो युवा वर्ग के विचार-व्यवहार में काफी तेजी से परिवर्तन आया है. पूँजीवादी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बाजारी लाभ की अन्धी दौड़ और उपभोक्तावादी विचारधारा के अन्धानुकरण ने उसे ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा और शार्टकट के गर्त में धकेल दिया. कभी विद्या, श्रम, चरित्रबल और व्यवहारिकता को सफलता के मानदण्ड माना जाता था पर आज सफलता की परिभाषा ही बदल गयी है. आज का युवा अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों से परे सिर्फ आर्थिक उत्तरदायित्वों की ही चिन्ता करता है.

युवाओं को प्रभावित करने में फिल्मी दुनिया और विज्ञापनों का काफी बड़ा

हाथ रहा है पर इनके सकारात्मक तत्वों की बजाय नकारात्मक तत्वों ने ही युवाओं को ज्यादा प्रभावित किया है. फिल्मी परदे पर हिंसा, बलात्कार, प्रणय दृश्य, यौन-उच्छृंखलता एवम् रातों-रात अमीर बनने के दृश्यों को देखकर आज का युवा उसी जिन्दगी को वास्तविक रूप में जीना चाहता है. फिल्मी परदे पर पहने जाने वाले अध ो-वस्त्र ही आधुनिकता का पर्याय बन गये है. वास्तव में परदे का नायक आज के युवा की कुण्ठाओं का विस्फोट है. पर युवा वर्ग यह नहीं सोचता कि परदे की दुनिया वास्तविक नहीं हो सकती, परदे पर अच्छा काम करने वाला नायक वास्तविक जिन्दगी में खलनायक भी हो सकता हैं.

शिक्षा एक व्यवसाय नहीं संस्कार है, पर जब हम आज की शिक्षा व्यवस्था देखते है, तो यह व्यवसाय ही ज्यादा ही नजर आती है. युवा वर्ग स्कूल व कॉलेजों के माध्यम से ही दुनिया को देखने की नजर पाता है, पर शिक्षा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों का अभाव होने के कारण वह न तो उपयोगी प्रतीत होती है व न ही युवा वर्ग इसमें कोई खास रूचि लेता है. अतः शिक्षा मात्र डिग्री प्राप्त करने का गोरखधंधा बन कर रह गयी है. पहले शिक्षा के प्रसार को सरस्वती की पूजा समझा जाता था, फिर जीवन मूल्य, फिर किताबी और अन्ततः इसका सीधा सरोकार मात्र रोजगार से जुड़ गया है. ऐसे में शिक्षा की व्यावहारिक उपयोगिता पर प्रश्नचिन्ह लगने लगा है. शिक्षा संस्थानों में प्रवेश का उद्देश्य डिग्री लेकर अहम् सन्तुष्टि, मनोरंजन, नये सम्बन्ध बनाना और चुनाव लड़ना रह गया है. छात्र संघों की राजनीति ने कॉलेजों में स्वस्थ वातावरण बनाने के बजाय महौल को दूषित ही किया है, जिससे अपराधों में बढ़ोत्तरी हुई है. ऐसे में युवा वर्ग की सक्रियता हिंसात्मक कार्यो, उपद्रवों, हड़तालों, अपराधों और अनुशासनहीलनता के रूप में ही दिखाई देती है. शिक्षा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों के अभाव ने युवाओं को नैतिक मूल्यों के सरेआम उल्लंघन की ओर अग्रसर किया है, मसलन-मादक द्रव्यों व धूम्रपान की आदतें, यौन-शुचिता का अभाव, कॉलेज को विद्या स्थल की बजाय फैशन ग्राउण्ड की शरण-स्थली बना दिया हैं. दुर्भाग्य से आज के गुरुजन भी प्रभावी रूप में सामाजिक रूप में और नैतिक मूल्यों को स्थापित करने में असफल रहे है.

आज के युवा को सबसे ज्यादा राजनीति ने प्रभावित किया है पर राजनीति भी आज पदों की दौड़ तक ही सीमित रह गयी है. स्वर्गीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने जब मताधिकार की उम्र अट्ठारह वर्ष की थी तो उन्होंने 'इक्कीसवी सदी युवाओं की' आह्वान के साथ की थी पर राजनीति के शीर्ष पर बैठे नेताओं ने युवाओं का उपयोग सिर्फ मोहरों के रूप में किया. विचारधारा के अनुयायियों की बजाय व्यक्ति की चापलूसी को महत्ता दी गयी. स्वतन्त्रता से पूर्व जहाँ राजनीति देश प्रेम और कर्त्तव्य बोध से प्रेरित थी, वहीं स्वतन्त्रता बादा चुनाव लड़ने, अपराधियों को संरक्षण देने और महत्वपूर्ण पद हथियाने तक सीमित रह गई. राजनीतिज्ञों ने भी युवा कुण्ठा को उभारकर उनका अपने पक्ष में इस्तेमाल किया और भविष्य के अच्छे सब्जबाग दिखाकर उनका शोषण किया. विभिन्न राजनैतिक दलों के युवा संगठन भी शोशेबाजी तक ही सीमित रह गये हैं. ऐसे में अवसरवाद की राजनीति ने युवाओं को हिंसा भड़काने, हड़ताल व प्रदर्शनों में आगे करके उनकी भावनाओं को भड़काने और स्वयं सत्ता पर काबिज होकर युवा पीढ़ी को गुमराह किया है.

आदर्श नेतृत्व ही युवाओं को सही दिशा दिखा सकता है, पर जब नेतृत्व ही भ्रष्ट हो तो युवाओं का क्या? किसी दौर में युवाओं के आदर्श गॉधी, नेहरू, विवेकानन्द, आजाद जैसे लोग या उनके आस-पास के सफल व्यक्ति, वैज्ञानिक और शिक्षक रहे. पर आज के युवओं के आदर्श वहीं है, जो शार्टकट के माध्यम से ऊँचाइयों पर पहुँच जाते हैं. फिल्मी अभिनेता, अभिनेत्रियॉ, विश्व-सुन्दरियॉ, भ्रष्ट अधिकारी, अपराध जगत के डॉन, उद्योगपति और राजनीतिज्ञ लोग उनके आदर्श बन गये है. नतीजन, अपनी संस्कृति के प्रतिमानों और उद्यमशीलता को भूलकर रातों-रात ग्लैमर की चका चौध में वे शीर्ष पर पहुँचना चाहते हैं. पर वे यह भूल जाते है कि जिस प्रकार एक हाथ से ताली नहीं बज सकती उसी प्रकार बिना उद्यम के कोई ठोस कार्य भी नहीं हो सकता. कभी देश की आजादी में युवाओं ने अह्म भूमिका निभाई और जरूरत पड़ने पर नेतृत्व भी किया. कभी विवेकानन्द जैसे व्यक्तित्व ने युवा कर्मठता का ज्ञान दिया तो सन् १६७७ में लोकनायक के आहवाहन पर सारे देश के युवा एक होकर सड़कों पर निकल आये पर आज वही युवा अपनी आन्तरिक शक्ति को भूलकर चन्द लोगों के हाथों का खिलौना बन गये हैं.

आज का युवा संक्रमण काल से गुजर रहा है. वह अपने बलबूते आगे तो बढ़ना चाहता है, पर परिस्थितियॉ और समाज उसका साथ नहीं देते. चाहे वह राजनीति हो, फिल्म व मीडिया जगत हो, शिक्षा हो, उच्च नेतृत्व हो-हर किसी ने उसे सुखद जीवन के सब्ज-बाग

दिखाये और फिर उसको भँवर में छोड़ दिया. ऐसे में पीढ़ियों के बीच जनरेशन गैप भी बढ़ा है. समाज की कथनी-करनी में भी जमीन आसमान का अन्तर है. एक तरफ वह सभी को डिग्रीधारी देखना चाहता है, पर उन सभी हेतु रोजगार उपलब्ध नहीं करा पाता, नतीजन-निर्धनता, मँहगाई, भ्रष्टाचार इन सभी की मार सबसे पहले युवाओं पर पड़ती है. इसी प्रकार व्यावहारिक जगत में आरक्षण, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, भाई-भतीजावाद और कुर्सी लालसा जैसी चीजों ने युवा हृदय को झकझोर दिया है. जब वह देखता है कि योग्यता और ईमानदारी से कार्य सम्भव नहीं, तो कुण्ठाग्रस्त होकर गलत रास्तों पर चल पड़ता है. निश्चिततः ऐसे में ही समाज के दुश्मन उनकी भावनाओं को भड़काकर व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह के लिए प्रेरित करते है, फलतः अपराध और आतंकवाद का जन्म होता है. युवाओं को मताधिकार तो दे दिया गया है पर उच्च पदों पर पहुँचने और निर्णय लेने के उनके स्वप्न को दमित करके उनका इस्तेमाल नेताओं द्वारा सिर्फ अपने स्वार्थ में किया जा रहा है.

इसमें कोई शक नहीं कि युवा वर्ग ही भावी राष्ट्र की आधारशिला रखता है, पर दुःख तब होता है जब समाज युवाओं में भटकाव हेतु युवाओं को ही दोषी ठहराता है. क्या समाज की युवाओं के प्रति कोई जिम्मेदारी नहीं? जिम्मेदार पदों पर बैठे व्यक्ति जब सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों का सरेआम क्षरण करते नजर आते है, तो फिर युवाओं को ही दोष क्यों? क्या मीडिया "राष्ट्रीय युवा दिवस" को वही कवरेज देता है, जो "वेलेण्टाइन-डे" को मिलता है? एक व्यक्ति द्वारा अटपटे बयान देकर या किसी युवती द्वारा अर्द्धनग्न पोज देकर जो (बद) नाम हासिल किया जा सकता है वह दूर किसी गाँव में समाज सेवा कर रहे व्यक्ति को तभी मिलता है जब उसे किसी अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा जाता है. आखिर ये दोहरापन क्यों?

युवाओं ने आरम्भ से ही इस देश के आन्दोलनों में रचनात्मक भूमिका निभाई है-चाहे वह सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक या सांस्कृतिक हो. लेकिन आज युवा आन्दोलनों के पीछे किन्हीं सार्थक उद्देश्यों का अभाव दिखता है. युवा आज उद्देश्यहीनता और दिशाहीनता से ग्रस्त है, ऐसे में कोई शक नहीं कि यदि समय रहते युवा वर्ग को उचित दिशा नहीं मिली तो राष्ट्र का अहित होने एवम् अव्यवस्था फैलने की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता. युवा व्यवहार मूलतः एक शैक्षणिक, सामाजिक, संरचनात्मक और मूल्यपरक समस्या है. जिसके लिए राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक सभी कारक जिम्मेदार है. ऐसे में समाज के अन्य वर्गो को भी जिम्मेदारियों का अहसास होना चाहिए, सिर्फ युवाओं को दोष देने से कुछ नहीं होगा, क्योंकि सवाल सिर्फ युवा-शक्ति के भटकाव का नहीं है, वरन् अपनी संस्कृति, सभ्यता, मूल्यों, कला एवम् ज्ञान की परम्पराओं को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने का भी है. युवाओं को भी ध्यान देना होगा कि कहीं उनका उपयोग सिर्फ मोहरों के रूप में न किया जाए.

ये आग कब बुझेगी (भागः०३)हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

ऊपर उद्धृत संग्रह मुख्य रूप से भ्रष्टाचार-कारण एवं निवारण, शिक्षा, आतंकवाद व सामाजिक समस्याओं से सरोकार रखने वाले, विषयों से संबंधित आलेख/व्यंग्य/कहानियाँ/कविताएँ/ग़ज़ल/दोहे आदि आमंत्रित हैं. इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचनाएँ १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा तीन रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : ३० सितम्बर २०१२

आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता **संःएस.बी. 53870201000 9259** में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है. अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ निम्नलिखित पते पर लिखें:

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93,
नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

पत्रकारों की सुरक्षा, संरक्षा एवं अधिकारों के लिए गठित

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया

✍ पत्रकारों के लिए निःशुल्क चिकित्सा सुविधा, आवास, समाचार संकलन हेतु निःशुल्क ट्रेन/बस यात्रा पास, वृद्ध पत्रकारों को मासिक आर्थिक मदद दिलवाने हेतु संघर्ष करना और सहयोग के लिए सरकार को प्रेरित करना.

✍पत्रकारों का वार्षिक दुर्घटना व स्वास्थ्य बीमा करवाना.

✍देश भर के त्रैमासिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक, दैनिक समाचार पत्रों, पत्रिकाओं के मालिकों, संपादकों, पत्रकारों को समय-समय पर निःशुल्क शिविर, गोष्ठी, सम्मेलन, अधिवेशन करके सहयोग एवं मार्गदर्शन करना।

✍आर.एन.आई, डीएवीपी के नियमों, समाचार पत्रों, पत्रकारों को मिल रही सरकारी सुवधिाओं की जानकारी प्रदान करना।

✍पत्रकारिता के उत्थान के समर्पित पत्रकारों/संपादकों को समय-समय पर सम्मानित करना।
पत्रकारों, संपादकों के हितों के लिए संघर्ष करना, कानूनी लड़ाई लड़ना और आपदा/दुर्घटना के समय सहयोग करना।

✍आर्थिक रूप से कमजोर पत्र-पत्रिकाओं के सहयोग के लिए फीचर न्यूज एजेंसी, वेबसाइट, सामाजिक, आर्थिक, आपराधिक, राजनैतिक, सर्वे, रिसर्च,, एनालसिस कराना और उसे प्रकाशित करवाना।

विस्तृत जानकारी व सदस्यता ग्रहण करने के लिए सम्पर्क करें:

10 रीवां बिल्डिग, लीडर रोड, (रेलवे जंक्शन के सामने) इलाहाबाद–211003, उ.प्र.

☎(का0)0532-2401671,09935959412, 9335155949 **Email:** media_fi@rediffmail.com

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर २.बिक्री की व्यवस्था
३.प्रचार–प्रसार की व्यवस्था ४.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011

bsesy% sahityaseva@rediffmail.com

किरया-करम

✍डॉ० प्रद्युम्न भल्ला,
कैथल, हरियाणा

बस स्टैंड पर उतर कर महादेव ने पहला काम यह किया कि सरकारी टोंटी पर, अपना मुंह धोया और फिर कुरते के झूलते लड़ से ही पोंछ लिया. आस-पास नज़र दौड़ाई, एक औरत अपने तीन बच्चों के साथ खाना खा रही थी. उससे गिलास मांगा. औरत ने ऐसा मुंह बनाया मानो उसे खा जाएगी. उसने आस पास देखा, सामने चाय वाला था. उससे गिलास मांगा वह भी शायद ना ही करता मगर महादेव ने उठा लिया. टोंटी से पानी पीया. गिलास वापस किया और बाहर निकल आया.

सामने नज़र दौड़ाई 'छाबड़ा अस्पताल' का बड़ा सा बोर्ड था. एक तरफ रेहड़ी वालों की लाईन दूसरी तरफ फड़ीयों वाले. नुक्कड़ की पान की दुकान पर खड़ा सिपाही सिगरेट उड़ा रहा था. बीच-बीच में साईड में लगी मूंगफली की रेहड़ी से पांच-सात मूंगफलियां झटक लेता था. महादेव को इन सबसे कोई सरोकार न था. यह उसके चाचा का शहर था. गर्मी की छुट्टियां हो चली थी उसके स्कूल में, सो बापू ने गांव से शहर भेज दिया था.

ससुरा गाँव में रहेगा तो उधम मचाएगा....जा सहर चला जा अपने चाचा के पास. कुछ काम काज सीख ले....आदमी बन जायेगा यूं भी पहले दो तीन साल उसका बापू छोड़ जाता था. मगर अब महादेव बड़ा हो गया था तो उसका बापू उसे बस तक छोड़ जाता था. सीधी बस थी. तीन घंटे का रास्ता था शहर का. बस में बैठे-बैठे कई बार महादेव ने अपनी पैंट की भीतर की जेब को ऊपर से हाथ लगाकर देख लिया था. कागज सा महसूस होने पर निश्चिंत हो गया था.

इसमें तीन सौ-सौ के नोट थे जो उसने सारा समय छुट्टियों से पहले गांव में जमा किए थे. सोचा था शहर में एक दिन मेले पर मौज मस्ती करेगा.

बाहर निकला तो रिक्शा वाले उसकी ओर लपक पड़े. रिक्शा साहब, आइए इधर आ जाइए...अरे आ जाओ बाबू....शहर...वह आगे निकल गया. चाहता तो यहां से पैदल भी जा सकता था. कौन सा दूर थी 'होल मार्किट' यहां से. पर सोचा रिक्शा में ही चला जाए. एक बूढ़ा खोखे पर उकडू बैठा चाय की आखिरी घूंट भर रहा था.

क्यों, चलोगे बाबा....महादेव ने पूछा...होल मार्किट तक....नाथी राम हलवाई की दुकान पर जाना है...क्या लोगे.

अरे जो जी में आए दे देना...वैसे तीन रुपया लेते हैं.

ठीक है चलो...और महादेव उछल कर रिक्शा में बैठ गया. मेरे चाचा होते हैं वो....बहुत पुरानी दुकान है..

हां बाबूजी, होल मार्किट भी तो पुरानी है. रिक्शा वाला बोला.

महादेव ने एक बार चाचा से पूछा भी था कि इसका नाम होल मार्किट कैसे पड़ा. अरे होल माने सारा.... यहां सारा कुछ ही तो मिलता है... तेल, कंधी से लेकर ससुरा टेलीविजन तक खरीद लो यहीं से...जूता, चश्मा, घड़ी, किताब का नहीं मिले यहां. पिछले साल गया था महादेव तो एक दर्जी और एक जूते गांठने वाला भी नजर आए थे.

होल मानी सारा नहीं चाचा, होल माने तो छेद होवे-हमारे मास्टर जी ने बताया था कि गांव में, यहां छेद तो कोई नहीं है इस मार्किट में....और चाचा झुंझला जाता....अबे जा घर जा, रोटी खा आ....दिमाग चाट गया है.

बस यही रोक दीजो भाई...महादेव ने रिक्शा वाले को कहा. पैसे दिए और कूदता हुआ चल पड़ा दुकान की ओर. बाहर जलेबी वाला मोटा, एक साईड में समोसे.

बड़ा सारा शोकेस जिस में सजी बर्फी, गुलाबजामुन, रसगुल्ले और न जाने क्या-क्या था. उसके मुंह में पानी भर आया. चाचा गद्दी पर था. उसे आता देखा तो आगे बढ़ आया.

पाय लागूं चाचा-महोदव ने पैरों में झुकते हुए कहा.

अरे आ रे महादेवा....आ गया. ..कल भी तुम्हारी बाट देखी. चाचा ने उसे सीने से लगाया. अरे ओ छन्नू.. एक चाय ला और समोसा भी...का खाएगा महादेव और...चाचा मैं बर्फी लूंगा और जलेबी भी...हां हां क्यों नहीं..तेरा बापू कैसा है रे...

बापू ठीक है चाचा...तोहे याद कर रहा था. आवेगा शहर मां मुझे लेने...तब मिलेगा. ठीक है-ठीक है, तो यहां महादेव विराजा चाचा के साथ वाली कुर्सी पर. रोज सबेरे चाचा के साथ आता. दिन भर नौकरों पर नज़र, रूपया पैसा संभालना. चाचा भी निश्चिंत हो जाते. जलेबी वाले से कहते.

लो उस्ताद जी-अब महीना भर आराम, लौंडा आ गया है ना गांव से ...यही संभालेगा सारा काम...और चाचा वाकई आराम परस्त से हो जाते.

महादेव का यहां बहुत मन लगता. कोने पर रामा हेयर ड्रेसर, बगल में मुन्ना भाई... उससे आगे चश्में वाला

बंगाली बाबू अगली दुकान हरि भाई किताबों वाला-इधर सेठ गिरधारी लाल किरयाने वाला जहां अब उसका लड़का बैठता था. एक एस.टी.डी. खुल गई थी अब, दर्जी मुख्तयार सिंह भी था और बरामदे में कोने पर था करतारा जुते गांठने वाला. वह सब को जानता था. सब दुकान वालों के अपने अपने ग्रुप थे. मसलन महादेव को पता था. हरि भाई और गिरधाई की गाढ़ी छनती थी. उसके चाचा और मुन्ना भाई की पक्की दोस्ती थी. रोटी खाना, दारू पीना सब काम इकट्ठे थे. बाल काटने वाला रामू कुछ अलग था.

महादेव की इनमें से सबसे ज्यादा पटती थी हरि भाई के लोंडे के साथ. राजू नाम था उसका. था भी राजकुमार जैसा. अपनी दुकान पर एक कंघा, शीशा स्पेशल रख छोड़ा था. हर आध ा घण्टे बाद शीशे में मुंह देखता, बालों में कंघी मारता था. दोपहर के समय जब काम मंदा होता तो महादेव उस के पास जा बैठता. कभी-कभी दोनों रोटी भी इकट्ठे खाते.

महादेव को लालच रहता उसकी दुकान देखने का. बहुत सी किताबें, रबड़े, पैन, पैंसिल, कागज न जाने क्या-क्या भरा हुआ था.

राजू भाई...आप तो खूब पढ़े लिखे होगें...नहीं, मैं इसीलिए पूछा कि आपकी दुकान है ना...तो क्या देखो, ये पढ़ाई साली अपनी किस्मत में कहां...आठ ही तो पढ़ा बस ऐसा गच्चा खाया कि मन ही न लगा. यूं ऐश बड़ी थी स्कूल में...लड़कियां भी संग थी...तूने तो देवा देखी भी न होगी....ऐसी सुंदर-सुंदर लड़कियां.. वह अपनी आंख दबाते हुए बोलता और फिर कंघा, शीशा निकाल श्रृंगार करने लगता.

राजू भाई...ऐसी बातों से मुझे शर्म आवे है....महादेव वहां से उठकर भाग आता. शहर के कुछ रिवाज, कुछ ढंग होल मार्किट में महादेव को बड़े अटपटे लगते. मसलन कोई लड़की किताब लेने आए तो राजू भाई का चेहरा खिल उठता. हां मगर हरि भाई होते तो वह कुछ भी प्रकट न करता. कहीं किसी दुकान पर सुंदर औरतें अथवा लड़कियां चढ़ी नहीं कि 'होल मार्किट' के कुछेक दुकानदारों की निगाहें ही पलट जाती. सब अपनी-अपनी दुकानों से उन्हें ही नापने तौलने लगते. मगर दर्जी और जूते गांठने वालों के चेहरे सपाट ही रहते. वे नज़र उठाकर भी ना देखते. मुन्ना भाई और रामा, राजू और चश्में बंगाली बाबू तो होठों पर जीभ फिराने लगते.

उसकी खुद की दुकान पर यदि कोई महिला ग्राहक आ जाती तो सब नौकर बस उन्हीं के आगे पीछे घूमते. यहां तक कि उसने कई बार कनखियों से देखा उसके अपने चाचा के चेहरे की चमक भी चांद जैसी हो जाती. छिः छिः उसे यह सब भद्दा लगता मगर वह क्या करे. चुपचाप बैठा रहता.

कई बार मुन्ना भाई उसके चाचा से बतियाने दोपहर में आ जाते. वह लौटने का बहाना कर उनकी बातें सुनता रहता. वे दोनों शायद उसे सोया मानकर ही अपने-अपने दिल की कहते.

अमां देखा नाथी राम आज उस लाल सूट वाली को....कैसे मटक-मटक कर चल रही थी... और उसके साथ जो वो पीले सूट वाली कसम से बहुत सुंदर थी यार. ..मुन्ना भाई चहकते हुए कहते.

यार, याद मत दिलाओं उन दोनों की...एक बात कहूं मुन्ना भाई. ..वो साला हेयर ड्रेसर और राजू हैं साले बहुत चालू...देखते नहीं कैसे हंस-हंस कर बतियाते हैं लौडियों से... ..नाथी राम ठंडी आह भरते हुए कहता.

अमां जवान आदमी हैं, पैसा लुटाते हैं..तुम में है जिगरा...लुटाओ पैसा और देखो तमाशा.... बाजार में क्या नहीं... क्यों.....मुन्ना भाई थोड़ा गुस्से से कहते.

हां, सच कहते हो भाई....देखो यार, कोई दो चार सौ में भी क्या बढ़िया...नाथी राम हौले से कहता. चिन्ता मत करो नाथी राम तुम्हारा काम तो करवाना ही पड़ेगा, अच्छा भाई चलता हूं, गिराहक हैं दुकान पर...

महादेव को गांव का होने के कारण शहर की ज्यादा जानकारी न थी लेकिन शहर के लोग ऐसे होते हैं यह वह सोच भी नहीं सकता था और उसके अपने चाचा का भी चेहरा वह देख चुका था. न जाने ये लोग अपने परिवारों में कैसे जीते होंगे ऐसे घिनौने चेहरे लेकर.... कहीं इनकी खुद की औरतें भी...छिः छिः वह भी क्या सोच रहा है.

आज दुकान पर भीड़ कुछ ज्यादा ही है. महादेव को फुर्सत कहां कि देखे आस-पास क्या हो रहा है. दुकान पर तीन चार भिखारी आए जिन्हें उसके चाचा ने कुछ नहीं दिया. केवल गालियां सुनाई. बदले में उन्होंने भी जाते हुए उसके चाचा सहित पूरे खानदान को बददुआएं दी. इस पर महादेव ने उन्हें एक रुपया गल्ले से निकाल कर दिया. चाचा ने कहा तो कुछ नहीं मगर वह समझ गया कि चाचा को उसका भिखारी को एक रुपया देना नागवार गुजरा है.

महादेव को लगता कि शहर में संवेदनाएँ शून्य हो चुकी हैं. यहां के लोग खुद पर, अपने मनोरंजन पर, अपने आराम पर तो सैकड़ो हजारों खर्च कर सकते हैं. मगर किसी असहाय, लाचार, भिखारी के लिए कुछ करना, उसे कुछ देना उन्हें गलत लगता है. महादेव अभी

छोटा है. आठवीं कक्षा का विद्यार्थी. मगर वह कुछ-कुछ शहर के चलन समझने लगा है. उसे लगता है अब उसे शहर नहीं आना चाहिए.

तभी उसकी नज़र दो लड़कियों पर पड़ी. वे भी भिखारिन सी लगती हैं. पहले हेयर ड्रेसर की दुकान के आगे जाकर खड़ी हो गई हैं. कुछ बात कर रही हैं. हाथ जोड़ रही हैं मगर उन्हें दुत्कार मिली. अब गिरधारी लाल की दुकान पर पहुंच गई हैं. महादेव को उनमें रूचि हो गई है. वह एक बार जाकर देखना चाहता है. मगर चाचा के दुकान पर होने से वह नहीं जा पाएगा.

कनखियों से वह फिर गिरधारी लाल की दुकान की तरफ झांकता है. लड़कियां उसे हृष्ट पुष्ट नज़र आ रही हैं. कुछ सामान खरीदने वाली होंगी. पंद्रह मिनट हो गए हैं. सेठ अपने काम में व्यस्त है. उसके गिराहक उसका ध्यान लड़कियों की ओर दिला रहे हैं. मगर वह सामान तोलने में व्यस्त है. वे दुकान से नीचे उतर आई हैं.

उन्हें दुकान से नीचे उतरने देख राजू ने शीशा कंघा निकाल कर बाल ठीक करने शुरु कर दिए है. उसे उम्मीद है कि लड़कियां उसकी दुकान पर आ सकती है. मगर लड़कियां मुख्तार दर्जी की दुकान पर जा खड़ी हुई.

महादेव, किधर देख रहा है, ध्यान दुकान में ही रख, लगता है उसके चाचा ने उसे देख लिया है, उधर देखते हुए..

जी चाचा जी...कहकर महादेव का ध्यान बंट जाता है. चाचा उसे छोड़ मुन्ना भाई की दुकान पर गए हैं वह कनखियों से देखता है. उसके चाचा और मुन्ना भाई हंस रहे हैं उन लड़कियों की ओर देखकर. जो अब राजू की दुकान की ओर बढ़ रही हैं. उन्हें देख राजू की बांछे खिल गई.

उन्हें पंद्रह बीस मिनट हो गए. राजू उनसे हंस कर बतिया रहा था. अरे यह क्या, अब राजू का चेहरा तमतमा रहा है...शायद लड़कियों ने कोई ऐसी बात कह दी जो उसे ठीक नहीं लगी. आस-पास के लोग भी इकट्ठे हो गए हैं.

अमां क्या बात है मियां...रामा हेयर ड्रेसर वाला न जाने कब निकल आया है. उसका ग्राहक भी उठकर आ गया आधे मुंह पर साबुन लगाये हुए. मुन्ना भाई भी उसके पास जा खड़े हुए. सोचता हूं मुझे भी जाना चाहिए, मगर मैं नहीं जाता..चाचा तो. ..अरे हां, चाचा भी वहीं आ गए हैं.

देखो ना चाचा, साली जबरदस्ती गले पड़ रही है...आप तो जानते है ये शरीफ लोगों की मार्किट है..ये न जाने कहां से आ गई हैं यहा को... राजू तैश में बोल रहा था.

अरे आप तो जानते हैं चाचा कि पिछले आठ साल से दुकान है अपनी. किस तरह शराफत से बसर कर रहा हूं. ये दो टके की लड़कियां शरीफ़ज़ादी बनने का ढोंग करती हैं..चाचा ये भिखारियों का वेश बनाकर घूमती है आप...

महादेव को लगा उसे भी वहां जाना चाहिए. देखनी तो चाहिए शरीफ की शराफत. वह काम छोड़ पहुंच गया है.

लेकिन असल बात क्या थी राजू-करतारा जूती गांठने वाला अब आगे आता है. सभी उसे जानते हैं कि वह कितना सही आदमी है. सच को सच और झूठ को झूठ कहने वाला आदमी है वह. सभी उसकी इज्जत भी करते हैं.

...वो बात ये थी कि..ये लड़कियां. .मान न मान मैं तेरा मेहमान ..बोली कि हमें पांच सौ रुपया चाहिए..हमारी मदद करो...मैंने तो इनसे कुछ नहीं कहा...बस अनाप शनाप बोलने लगी. .और आप तो जानते हैं मैं कितना शरीफ़ आदमी हूं.

हां, तुम्हें ही नहीं सारी मार्किट के लोगों को जानता हूं मैं कितने शरीफ, दया धर्म वाले लोग हो तुम सब.. करतारे की बात सुन मुझे भीतर कहीं बहुत अधिक खुशी सी हुई. मगर एक दो को छोड़ कर सभी के सर झुक गए थे.

तुम्हीं बताओ, क्या बात थी, अब करतारा उन लड़कियों से मुखातिब हुआ. वे बेचारी एक कोने में गुमसुम सी खड़ी थीं. चेहरों से लग रहा था जैसे अभी रो देंगी. लड़कियों का मैंने पहली बार चेहरा देखा तो पाया कि गरीबी और अभावों की मलिनता जरूर थी उनके चेहरों पर मगर वे सुंदर थीं. वे मुझे ऐसा लगता था मानो इस प्रदेश की न होकर किसी कबीले की लड़कियाँ हो.

उन्होंने सारे दुकानदारों के चेहरों पर दृष्टि डाली फिर बोली....बात केवल इतनी सी थी कि हमारा बापू आज तड़के मर गया. उसकी लाश झोपड़ी पर पड़ी हैं. हमारे पास रोटी जुटाने तक को तो पैसा नहीं ..फिर कफन, लकड़ी कहां से जुटावें...बस उसी का किरया करम खातिर कुछ मांगने आए थे. इन्हीं शरीफ़जादों पास. ..एक लड़की ने पूरी बात की और दूसरी लड़की फफक पड़ी.

घर पर कोई मर्द होता तो यह नौबत न आती...मजबूर और लाचार हैं हम बाबू जी....मगर हमें ना मालूम था कि यहां ऐसे-ऐसे लोग हैं जिनकी भूखे नजरों केवल औरतों के जिस्म

देखती है.

सभी लोगों को मानों सांप सूंघ गया था. वे एक-एक कर खिसकने लगे थे. करतार ने सभी से अपील की थी कि सभी थोड़ा-थोड़ा करके उनकी मदद कर सकते हैं. मगर कोई आगे न आया. महादेव भी चाचा के पीछे लौट आया था.

करतोर ने अपनी फटी कमीज़ के नीचे पहनी बनियान से दो सौ रुपये निकाल कर उन्हें दिए थे. कहते हुए कि उसने पांच सात रोज में अपनी बेटी को त्योहार भेजने के लिए यह दो सौ रुपये बचाए थे. मगर किरिया करम ज्यादा जरूरी है. वे भी तो उसकी बेटियाँ जैसी हैं. उन्होंने मना भी किया मगर करतारे ने कहा कि बेटियां तो बेटिया होती है. आज उनके पिता का किरया करम न हुआ तो हो सकता है कल उसे चिता भी नसीब न हो.

और वे चल दी थी वापस. महादेव दुकान पर बैठकर सोचता रहा उन्हीं के बारे. फिर देर बात उठकर दौड़ पड़ा उस दिशा में जिधर वे गई थीं.

काफी देर बाद लौटा. कहां गया था तू महादेव ने कहा-उन्हें अपनी जेब खर्ची से बचाए तीन सौ रुपये देने...

क्या...और चाचा का मुँह खुला का खुला रह गया.

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज मासिक

(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949 ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

महोदय,
मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक / पंचवर्षीय / आजीवन / संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप.........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूँ. अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्नलिखित पते पर भेजें.

नाम :...
पिता / पति का नाम :...
पता :...
डाकखाना :..जनपद...
राज्य :..पिन कोड...
दूरभाष / मो0...ईमेलः..

विशेष नियमः

01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस)ः UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10 / –	$ 1.00 /
वार्षिक	रु0 110 / –	$ 5.00 /
पाँच वर्ष :	रु0 500 / –	$ 150 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / –	$ 350 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / –	$ 1500 /

नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

खण्ड काव्य

रचनाकारः
बालाराम परमार 'हंसमुख'

मूल्यः ५०/रुपये मात्र

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-९३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र.-२११०११ मो०९३३५१५५९४९

अभिमानी

दीन-दुखियों के श्रमबल से पोषित
अहंकारी, व्यभिचारी, हठी, दर्पी
भव जीवन का सकल प्रयोजन
बर्बरता के बाहुबल से करता अर्जित

राष्ट्र, धर्म, समाज, युग प्रलयंकार
हृदयहीन, नग्न आत्मा क्षुधित
अग्निचंड, अंतजीवन से विशृंखलित
दुर्जन, संपदा, सुराओं से संसेवित
निःसंशय रावण का वंशज है संभावित

मानवता इससे सदा ही रही वाधित
युगविनाशक, कालपूजक, अन्यायी
तन का शिष्ट, सुंदर, कोमल, आकर्षित
निज जीवन के हित, लाचारों को कर
संगठित, सुबह-शाम को करता निर्मित

जीने के सारे उपकरणों को कर अधिकृत
वायु काल को करता संचालित
अजर, अमर, मानवता का यह दुश्मन
अमूर्त्त होकर भी, भव में रहता मूर्तित।

✍डॉ० तारा सिंह, नवीमुम्बई,

ग़ज़ल

जाने कैसा मोड़ आ गया?
दिन में ही अंधियार छा गया।
कोई पूछे, नहीं बोलते
मन प्राणों पर कौन छा गया?
मौसम बदला, मन भी बदला
थके पथिक को तिमिर भा गया।
ऐसा तो होता ही रहता
गीत किसी के कोई गा गया।
जगत सिंधु में बिन भीगे ही
सन्यासी घर लौट आ गया।
आत्म ज्ञान की पठशाला में
पढ़ने वाला मोक्ष पा गया।

✍ **डॉ० इन्दिरा अग्रवाल,**
अलीगढ़, उ.प्र.

मां

अब मैं नागरी हो गई हूं
तुम वही चाहती थी न
हमने बदल लिया है
रहन-सहन बोलने का रंग-ढंग
हमारी भाषा में
तुम्हारी बोली
रह-रह कर झलकती थी
उसे मैंने सदा-सदा के लिये
निकाल दिया है बड़ी मशक्कत के बाद
ताकि हमारे बच्चों पर
उसका असर न पड़े
माँ!
मेरे पति को मालूम है
शहर के हर कोठे अटारी-क्लब
अब तो उनके साथ मैं
क्लब में जाती हूँ
मां! मुझे गर्व है
शहर में मेरा अपना मकान है
माँ सच कहती हूं
अब तू बार-बार
चिट्ठियां लिखना बंद कर दे
और बंद कर दे
बार-बार आग्रह करना
गांव घर आने का
मां तुम्हारे भावुक पत्रों को
पढ़-पढ़कर मुझे खीझ होती है

✍डॉ० रीता कमल गौतम
ठाणे पश्चिम, महाराष्ट्र

शायद

मैं एक ऐसी सराय हूं
जहां पर सभी आकर
रुकना चाहते हैं
बार-बार मुरझाये हुये
चेहरों को जीवंत
करने का प्रयास करती हूं।
अपनी उदासी अपनी पीड़ा
को उन तक पहुँचने
न दूंगी।
प्रतिदिन प्रति सुबह
यही अभ्यास करती हूं।
परन्तु आज शायद
मेरी ममता का कलश
लुढ़कते-लुढ़कते बचा
आज शायद मेरे अन्दर
कुछ दरकने-सा लगा।
पति को माँ से कहते हुये
सुना!
अरे माँ वह बीमार है तो
मैं क्या कर सकता हूँ।
दवा तो ला दी है।
खाना तो उसका काम है।
नहीं खाती तो न खाये
मेरे पास इतना समय कहाँ?
मै दवा नहीं खिला सकता,
हां अन्तिम घड़ी में
पानी पिला सकता हूं।

✍पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली',
रायबरेली, उ.प्र.

फूल से किसी ने पूछा तुमने दी खूशबू तुमको क्या मिला?
फूल ने कहा-देने के बदले लेना तो ट्रेंड है, जो देकर भी कुछ ना मांगे वही तो फ्रेंड हैं.

जितेन्द्र सागर-८६५७१२४४६०

जीवन में आत्मसंयम का महत्त्व

- आत्म संयम मनुष्य में विवेकपूर्ण आचरण को अनुप्राणित करता है.
- आत्म संयम हमें दूसरों के प्रति ऐसे आचरण की ओर प्रवृत्त करता है, जिसकी अपेक्षा हम दूसरों से अपने प्रति करते हैं.
- आचरण के साथ-साथ वाणी में भी आत्मसंयम बनाये रखने की आवश्यकता पड़ती है. 'ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय, औरौं को शीतल करें आपहु शीतल होय।'

✍ **डॉ० गिरीश दत्त शर्मा**
संगरिया, राजस्थान

मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य एवं सन्तुलन के लिए आत्म संयम जहां दैनिक कृत्यों- आहार -व्यवहार में आवश्यक है, वहां व्यक्तित्व की पहचान, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता के लिए आचरण में भी अपेक्षित है. सामान्यतः व्यक्ति जन्म लेता है, उसका पालन पोषण होता है और घर गृहस्थी में संलिप्त होकर संसार से विदा हो जाता है. बिना किसी जान-पहचान के, बिना किसी प्रतिष्ठा एवं लोक सम्मान के. इस प्रकार के आचरण तो मनुष्येतर प्राणियों में भी मिलते है फिर मनुष्य के जीवन की अन्य जीव जन्तुओं से भिन्नता एवं सार्थकता ही क्या रह जाती है? इसीलिए कहा गया है कि 'धर्मोहितोषां अधिको विशेषः धर्मेण हीनाः पशुभि समानाः' अर्थात धर्म के बिना मनुष्य पशुओं के समान है. मानव के इस प्रकार के आचरण में आत्म संयम की पग-पग पर आवश्यकता पड़ती है. आत्म संयम मनुष्य में विवेकपूर्ण आचरण को अनुप्राणित करता है जिससे मनुष्य अनावश्यक, अनपेक्षिक एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में भी तनाव कुण्ठा और विषादपूर्ण स्थिति से उबर जाता है जबकि अविवेकी पुरुष धैर्य की सीमा लाँघ कर अपने गलत आचरण एवं व्यवहार के कारण न केवल दुःखद अपमान पूर्ण स्थिति को प्राप्त होते हैं अपितु उपहास के पात्र भी बनते हैं. ऐसे अवांछित आचरण से वे स्वयं के लिए शत्रुओं और विरोधियों की संख्या ही अधिक बढ़ा लेते हैं. उन्हें इस बात का भान नहीं रहता कि इस संसार में अपने प्रति मान-अपमान, मित्र-शत्रु, सुख-दुःख आदि के लिए वे स्वयं उत्तरदायी है. हमारी आत्मा स्वयं हमारी ही शत्रु-मित्र है, जैसा कि गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा है "उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत, आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।" अर्थात् मनुष्य यदि अपना उद्धार करना चाहता है तो अपनी आत्मा को (अपने सद् आचरण द्वारा) उठाये, उसे अधोगति की ओर न बढ़ने दे क्योंकि यह मनुष्य की अपनी आत्मा ही है जो स्वयं अपनी ही मित्र और अपनी ही शत्रु हैं.

देखने में आता है कि हम अपने सम्मान, स्वार्थ एवं अधिकारों के प्रति इतने जागरूक और संवेदनशील रहते हैं कि जरा सा भी आघात लगने अथवा कार्य में व्यवधान आने पर उत्तेजित हो उठते है और प्रतिकार रूप में अमर्यादित और अवांछित कार्य करने लगते हैं. यहीं से उत्पन्न हो जाता है विरोध, विद्रोह और वैमनस्य जो आगे चलकर एक भयानक रूप धारण कर लेता है. मनुष्य की इस प्रकार की व्यक्तिगत मान्यताएं स्वयं के लिए हीं नहीं अपितु समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए विनाशकारी बन जाती हैं जिनके परिणाम विघटनकारी तत्वों के सृजन और युद्धों की विभीषिका रूप में प्रकट होते हैं. आत्म संयम मनुष्य के इस प्रकार के उतावलेपन को रोकता है, विवेकपूर्ण आचरण को प्रेरित करता है तथा दूसरों के साथ 'आत्मवत सर्व भूतेषु' की भावना के अनुशीलन की ओर उन्मुख करता है. इससे न केवल वैमनस्य दूर होता है अपितु शान्ति एवं सद्भावपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता है.

आत्म संयम हमें दूसरों के प्रति ऐसे आचरण की ओर प्रवृत्त करता है. जिसकी अपेक्षा हम दूसरों से अपने प्रति करते हैं. इस प्रकार का आचरण एक आदान-प्रदान का व्यावहारिक रूप है जिसकी प्रगाढ़ता के लिए समभाव अपेक्षित है क्योंकि जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म आदि का भेद तो सामाजिक देन है. आत्मा तो सभी में एक परमात्मा का अंश रूप है फिर मनुष्य मनुष्य के प्रति आचरण में भिन्नता क्यों? भारतीय संस्कृति में तो इसी भावना के फलस्वरूप विश्व की अन्य संस्कृतियों में वैशिष्टय रखती है. प्रत्येक जीव में समान आत्मा और परमात्मा का अंश मानकर ही

वह विश्व को एक कुटुम्ब की भावना से देखती है. उसमें 'यह अपना है यह पराया है' की भावना कहां? क्योंकि 'अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसां उदार चरितानाम् बसुधैव कुटुम्बकम्' हैं.

आचरण के साथ-साथ वाणी में भी आत्म संयम बनाये रखने की आवश्यकता पड़ती है. हमारे मुख से उच्चरित शब्द यद्यपि निर्जीव एवं निश्चेतन लगते हैं परन्तु उनमें जो शक्ति, सामर्थ्य एवं प्रभाव निहित है. वह बड़े-बड़े घातक अस्त्र-शस्त्रों की सामर्थ्य से बाहर है. घातक शस्त्रों की चोट व्यक्ति आसानी से झेल लेता है परन्तु शब्द बाण के नुकीले प्रहार इतने घातक और गहरे होते हैं कि व्यक्ति को जीवन भर सालते रहते हैं और विनाश का मार्ग प्रशस्त हो जाता है. बड़े बड़े युद्ध इसी के परिणाम रहे हैं. इसीलिए महापुरुषों ने सुझाव दिया है कि 'ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय, औरों को शीतल करें आपहु शीतल होय।' आत्म संयम के अभाव में अपना विवेक भूल कर मनुष्य कभी-कभी आवेशपूर्ण अवस्था में अनेक ऐसे कृत्य कर बैठता है जो दूसरों को उत्तेजित करने में अग्नि में घी की आहुति का काम करते हुए उसे घातक से घातक कार्य करने की स्थिति में ला देते हैं. ऐसी स्थिति में यदि दूसरा पक्ष धैर्य एवं संयम से काम ले तो 'तनिक शीत जल से मिटे जैसे दूध उफान' की भांति आवेशपूर्ण विद्रोहात्मक स्थिति को आसानी से रोक सकता है.

दूसरों के साथ सामान्य रूप से बातचीत करते समय भी हमें अपने आत्म संयम का ध्यान रखना चाहिए. जहां तक हो सके कम बोलें. इससे एक ओर बोलने में जो शक्ति खर्च होती है उसकी बचत होगी. दूसरे, अनर्गल, बेमानी बातों से बचाव होगा तथा बातचीत में एक गाम्भीर्य बना रहेगा. बात करते समय हमें मात्र कम बोलना ही समीचीन नहीं है अपितु शब्दों को तोलकर उनके स्वरूप, अर्थ, व्याख्या तथा अवसर के अनुकूल बोलना चाहिए. इससे न केवल आपकी बात का वजन बढ़ेगा अपितु आपका व्यक्तित्व भी प्रभावी बनेगा.

सत्य का अनुशीलन व्यक्ति की चारित्रिक दृढ़ता एवं संयम का परिचायक है परन्तु सत्य का आचरण तभी तक उपादेय है जब तक उससे किसी पक्ष को हानि अथवा कष्ट नहीं पहुंचता अन्यथा उसका प्रभाव विपरीतार्थक होगा. भारतीय संस्कृति भी यही कहती है-'सत्यं ब्रूयात, प्रियम् ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यमप्रियम' अर्थात सत्य बोलो, प्रिय बोलो परन्तु ऐसा सत्य कभी न बोलो जो दूसरों को अप्रिय है. अतः सत्य का अनुशीलन करते समय जब कभी कटु सत्य की अभिव्यक्ति की आवश्यकता हो तो आत्म संयम का अनुगमन करते हुए उसका प्रस्तुतीकरण इस प्रकार से करना चाहिए जिससे व्यक्ति को आत्मिक पीड़ा न पहुंचे.

इस प्रकार यदि हम अपने आचरण, व्यवहार, कृत्य, भावना और मन में आत्म संयम का भाव बनाये रखें, उसका अनुशीलन करें तब अनेक आपदाओं-विपदाओं और विषम परिस्थितियों से बचा जा सकता है. ऐसे आचरण वाला व्यक्ति स्वयं के लिए तो लाभकारी होगा ही समाज में भी लोकप्रिय एवं आदर्श रूप में मान्य हो सकता है.

हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाने वाले सम्मानित होंगे

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को संस्थान २००६ से सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं को अपने अंक पत्र, नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित कराकर ३० नमवब्र २०१२ तक नीचे लिखे कार्यालय के पते पर भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में हिन्दी उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्नलिखित पते पर लिखेंः

सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

उ.प्र.मो० 09335155949 **email:** sahityaseva@rediffmail.com

कहानी

कँटीली गलियाँ

ज़ेबा रशीद,
जोधपुर, राजस्थान

मुनिया झाडू लगाकर पोछा लगाने लगी. वह सामने बैठा उसे देखा रहा था. मुनिया का झुका शरीर और सामने ब्लाउज के गले पर रामबाबू निर्लज्जता से नजर गड़ाए मुस्करा रहा था.

अचानक दोनों की नजरें टकराई. यंत्रवत....उसकी निगाहें अपने खिसके आंचल की तरफ गई. उसने झेंपकर आंचल ठीक किया.

'इस उम्र में यह बूढ़ा....बेसरम. न जाने कब से ताक रहा है. उसका चेहरा शर्मिदगी से लाल हो गया. झाडू पोछा करते समय तो अक्सर आंचल ढलकता ही रहता है. काम की जल्दी के कारण कभी-कभी ध्यान नहीं दे पाती.

उसका उसूल है कि वह किसी से झगड़ा नहीं करती. वह अच्छी तरह जानती है कि औरत की इज्जत कांच के प्याले की तरह होती है. तड़क गया तो निशान कभी नहीं जाता.

उसने रामबाबू पर कृत्रिम क्रोध से आंखे निकाली. तो वह बेशर्मी से खिलखिला कर हंस पड़ा.

तीस वर्ष की सांवली रंगत वाली तरुणी. काले घुंघराले घने केशों के बीच सिन्दूर की लाल रेखा. भरे-भरे शरीर की मुनिया चार घरों में चौका बासन करती है.

उसे सुबह जल्दी काम पर आने की आदत है. मालकिनों के पति उस समय घर में रहते हैं तो यह उनकी मजबूरी है.

मुनिया को बहुत बोलने की आदत है. इसलिए उसके हाथों के साथ जबान भी खूब चलती है. पूरे शहर के समाचार सुनाती रहती है.

'किसके घर में क्या घटा. किसकी बेटी की मंगनी टूट गई. किसकी बरात जायेगी. किस घर में पति-पत्नी में झगड़ा चल रहा है. सबका आंखों देखा हाल भी बताना जरूरी समझती है.

कभी किसी का पति मुनिया से अपनत्व भरी बातें करता तो उन्हें नहीं सुहाता. ...वे औरतें भुनभुनाती. फिर भी मजबूरी से चुप रहना ही पड़ता कि कहीं काम छोड़ दिया तो?

पति घर नहीं होता तो वे रस ले लेकर मुनिया की बातें सुनतीं. घर में घुसते ही मुनिया आवाज लगाती.

"बाई जी राम-राम"

"मेम साब राम-राम"

जैसा रुख देखती वैसी बोलती.

"अरी मुनिया तूने कल आंगन नहीं धोया, कल कूड़ा बाहर नहीं फेंका.. कल तो बाई तूने बर्तन बहुत गंदे ध ोये."

"ए लो बाई जी...अबै कर देवूं"

वह घर वालियों की बातों पर कान दिए बगैर अपनी कमर में लहंगा लपेटती और काम करने में लग जाती. लहंगा पिंडलियों तक ऊंचा आ जाता. छोटा...कसे ब्लाउज पर रंग-बिरंगे मोतियों की मालाओं के बीच सस्ता मंगलसूत्र चमकता रहता.

घर-घर इतने सालों में काम करने के बाद वह इसी निष्कर्ष पर पहुंची कि औरतें काम लेने में बहुत किट-किट करती है. और पढ़े लिखे इनके पति बेचारे सीधे-सादे....पत्नियों से बहुत डरने वाले होते हैं.

फिर भी अपनी पत्नी से आंख बचाकर काम वालियों पर सरस निगाह डालते रहते हैं.

कभी देखते कोई मालकिन बहुत हुक्म चला रही है तो आंगन में पसर कर बैठ जाती.

"आज तो मैं बड़ी थाकगी हूं..पोचा तो कल ही लगावूंगी." या मालकिन को अधिक नाक चढ़ाते देखती तो कहती, "आज तो म्हने शादी में जावणै है.... मेमसाब एक बढ़िया सी आपरी पुरानी साड़ी तो दे दो. साल भर हो गया अभी तक आपने कुछ भी नहीं दिया. "

मीठी मार से मालकिन की बोलती बन्द करना वह खूब जानती है. फिर तो वह गरज से काम करवाती. डर जाती कि कहीं साड़ी के पीछे कामवाली भी ना चली जाए.

चारों घरों में रामबाबू शर्मा का घर काम के लिए आखिरी होता है. लीलाबाई को तो लो ब्लड प्रेशर है. कोई भी सीधी बहस उसके रक्तचाप पर हमला बोल सकती है. दोनों बेटे परदेश में अपनी पत्नियों के साथ रहते हैं. उन दोनों की उम्र देखकर मुनिया को दया आती. इसलिए उनका हर काम कर देती.

लीलादेवी भी उसका ख्याल रखती. कभी-कभी काम करने से पहले कड़क व मीठी चाय मलाईडाल कर उसे देती. वह उनके पलंग के पास ही जमीन पर बैठकर पीते हुए सोचती अब हाथ में पैसे आयेंगे तो रघुआ को ऐसी ही चाय बनाकर पिलाऊंगी. घर में तो काली व कम दूध की चाय बनती है.

बीमार पति रघुआ हाथ ठेले पर पुराना लोहा, रद्दी और टूटा-फूटा सामान खरीद कर कबाड़ी सेठ को बेचकर कुछ कमा तो लेता है लेकिन सब पैसे शराब की भेंट चढ़ाकर घर आता है. अभी कल ही की तो बात है. वह शराब में धुत्त घर आया.

'ऐसे काम कैसे चलेगा? बच्चों की फीस देनी है. घर में राशन पानी नहीं हैं....थोड़ा तो सोचो...?'

सुनते ही रघुआ ने उसे लातों और घूसों से मारना शुरू कर दिया.
'मेरी कमाई का पीता हूं...तेरे बाप की कमाई का नहीं.'
लीलादेवी ने उसके शरीर पर लाल-नीले निशान देखे तो कहा "तूझे इतनी बुरी तरह पीटता है."
उसकी आंखें छलछला आईं.
कसी हुई देह! बालों को इकट्ठा कर कसकर बनाया जूड़ा. छोटा कसा ब्लाउज. लांग लगाने से पिंडलियों तक ऊपर आ गया लहंगा. स्वस्थ हाथों में कांच की चुड़िया....पैरों में स्टील की पायल. इतनी बन ठन के रहने का शौक होता है इनको....गहनों के प्रति मोह...चाहे नकली ही.
'तू अपनी कमाई का खाती है. बच्चों को भी तू ही पालती है... फिर यह रोज-रोज की मार क्यों खाती है? छोड़ दे उसको.'
सहानुभूति जताते हुए लीलादेवी ने समझाया.
"नहीं बाई सा....ओ ईज तो म्हारा सूं नहीं हो सके. आखिर तो वो म्हारो ध णी है. अर धणी री मार सूं तो सुरग मिलै."
"तुझे कुछ देता भी तो नहीं....सिवाय मार के."
"जैसा तैसा भी है बाईजी... है तो म्हारो सुहाग. यह शरीर तो उसका ही है मारे चाहे काटे....मेरा सुख दुःख तो उसके साथ ही हैं."
मुनिया पति पर भीतर से झल्लाती है. चिढ़ती भी है लेकिन उसे पति पर दया भी बहुत आती है.
मुनिया ने चपातियां बनाई. रसोई समेटते उसने देखा रामबाबू सामने खड़े कुछ न कुछ इशारे कर रहे हैं. उनकी आंखों में बेहयाई थी.
उसे पहले से ही आशंका थी कि रामबाबू जब तब उसे संकेत करते रहते है और वह टाल देती है, कभी हंस के तो कभी अनजान बनके.
बाई का काम तो कांच के टूटे टुकड़ो पर चलने की तरह है. अक्सर हर घर के पुरुष ...ये बड़े लोगों का इस तरह झांकना कोई नई बात नहीं है.
मुनिया ने फिर उसकी निगाहों की चुभन को अपने बदन पर महसूस किया. उसने देखा रामबाबू पास आकर खड़े हैं.
"हटो साब काम करने दो."
"बस तेरी यही तो आदत खराब है.. .बात ही नहीं समझती."
वह मन ही मन बोली "सब समझती हूं."
रामबाबू को एक अजीब पराजय का बोध हो रहा था. इस असफलता से वह सिहर उठा. दो टके की औरत.. ..बड़ी सती सावित्री बनती है. उसने सिगरेट निकाली और कश लगाने लगा. सिगरेट पर उभरी राख देखता रहा. वह ऊपर से शांत लगा रहा था. लेकिन उसके अन्दर उथल-पुथल हो रही थी. उसे अपने दोस्तों की रंगीन मिजाजी की बातें याद आ रही थी. तमाम दोस्त अलग-अलग ढंग से अपनी पत्नियों से जालसाजिया कर रहे है. सबने अपने अलग-अलग ठिकाने बना रखे हैं. बड़े गर्व से अपने किस्से सुनाते हैं.
आज लीलादेवी की तबीयत खराब है. वह गोली लेकर सोई है. इसलिए रामबाबू आस-पास मंडरा रहे हैं. बर्तन साफ करते हुए अचानक दोनों की नजरें टकराई. उसका कलेजा धक से रह गया.
रामबाबू ने पास आकर मनुहार भरे स्वर में फुसफुसा कर कहा, "लीला सो रही है....आ जा कमरे में..." उसकी मुस्कराहट अश्लील थी.
सुनते ही मुनिया के शरीर में जैसे हजार बिच्छुओं ने डंक मार दिये. मन हुआ उसका मुंह नोच लूं.
"शरम आनी चाहिए आपको मैं आपको बड़े भाई समान मानती हूं. मैं यहां काम करने आती हूं. इज्जत बेचने नहीं. वह क्रोध से कांपती हुई बोली."
"अरे तो नाराज क्यों होती है...जरा मेरा भी तो सोच..."
"आपरी उम्र रो लिहाज करो...अड़ी बातां आपने शोभा नीं देवे."
वह क्रोध से जोर-जोर से बर्तन रगड़ने लगी. उसकी देह क्रोध व मजबूरियों से पसीने में नहा गई. वह विचलित हो गई कि यह तो आज पीछे ही पड़ गया है. वह जल्दी घर चली गई.
उस दिन हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी. काले सफेद रूई जैसे बादलों ने आकाश को घेर रखा था. सब कुछ सुहावना था.
उसकी स्थिति अजीब थी. काम करने तो जाना जरूरी था. अभी महीना होने में आठ दिन शेष थे. तीन सौ रुपयों में घर में आटा, दाल, चावल, तेल... क्या क्या आयेगा. चलते धन्धें को ठोकर भी तो नहीं मार सकती.
"अरी मुनिया वह तो तत्कालीन उत्तेजना में कह गया था. तू राजी नहीं तो कोई बात नहीं...मेरे लिए तू कोई दूसरी बाई से बात कर दे...इनाम दूंगा."
क्रमशः

अर्ज किया है.....
कोई लड़की हमें ठुकरा दे जो गम नहीं...
कोई लड़की हमें ठुकरा दे जो गम नहीं...
अरे उस लड़की की मां की.....
किस्मत फूटी जिसके, दामाद हम नहीं। ०८९५७१२४४९०

सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना पर)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना) अप्रकाशित एक रचना तीन प्रतियों में, **प्रवासी भारतीय सम्मान**-ऐसे प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों. एक रचना की तीन प्रतियां, **हिंदी सेवी सम्मान**-(विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक)- किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **राजभाषा सम्मान**-सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए. विस्तृत विवरण तीन प्रतियों में, **राष्ट्रभाषा सम्मान**-अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)- संबंधित विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **कला/संस्कृति सम्मान**-किसी भी कला (संगीत, नाटक, कला, पेंटिग, नृत्य आदि) के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए, विस्तृत विवरण तीन प्रतियो में, **बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियो में, **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में. **राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, **पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**- पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण एक अप्रकाशित रचना तीन प्रतियों में, **सांस्कृतिक विरासत सम्मान**- ऐसे व्यक्ति/संस्थाएँ जो देश के किसी भी क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में, **विधि श्री**-विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने वालों को प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **डॉक्टरश्री**-डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **शिक्षक श्री**-शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **सैनिक श्री**-सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी की सेवा प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **विज्ञान श्रीः** विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **प्रशासक श्री**-ऐसे प्रशासक जो किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा दे रहे हो, प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित १०० पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**ः साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री

विशेषः१. प्रविष्टि के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. सम्मान में प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जायेगी. जो जनवरी २०१३ से लागू होगी.

३. प्राप्त पुस्तकें/रचनाएं किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएंगी. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक

पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा.

४. सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा.

५. अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा. न ही इस संदर्भ में कोई पत्र-व्यवहार किया जाएगा.

६. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

७. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१२

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०: ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतू प्रविष्टि
संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले..
सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नाम : ....
पिता/पति का नामः..
पताः..
....
दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-..........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः...
विधा...................वर्ष.........................प्रेषित प्रतियाँ.............
धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि......................बैंक का नाम..........................संख्या........................
....

मैं शपथ पूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मैं उन्हें स्वीकार करता/ करती हूँ

भवदीय/भवदीया
हस्ताक्षर...................................
पूरा नाम...................................

प्रस्तावक
नाम..............................
पूरा पता.......................
हस्ताक्षर..........................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

भगवान बड़ा है या गुरू?

✍✍सीता देवी
पत्नी रामकृष्ण उपाध्याय, अन्नपूर्णश्वरी निलय, एनएमसी, तीसरा क्रास, भद्रावती, कर्नाटक-५७७३०३

गुरू गोविंद दोऊ खड़े काके लागु पाये बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।

इसके अनुसार हमारे सामने गुरू और भगवान एक साथ खड़े हो जाये तो हम गुरू को प्रणाम करते है क्योंकि हमें भगवान से परिचय कराने वाले गुरू है. इस विषय को एक छोटा सी एकांकी में चित्रित किया है.

राजूः आज एक मंत्र को पढ़ा इसका अर्थ बड़ा है और अपने गुरूजनों को देखने की दृष्टि ही बदल गया.

सतीशः वह विचार मुझे भी बताओ.

राजूः ब्रम्हा, विष्णु, महेश तीनों की कल्पना कर लो, उसके बाद तुम्हें क्या मालुम होता है? बताओ

ब्रम्हः मैं ब्रम्ह हूं, मैं सृष्टि करता हूं. यह मेरा काम है. मैं सब प्राणी का निर्माण करता, पृथ्वी को संभालता हूं, विश्व निर्माता हूं.

विष्णुः मैं ब्रम्ह से निर्मित सृष्टि में रहने वाले जीवों को पालन (रक्षा) करता हूं. मैं सबको आहार देता हूं.

महेशः मैं ब्रम्ह विष्णु से निर्मित जीवियों को समा लेता हूं. समय आने पर संहार करता हूं. नाश करके नव निर्माण का मार्ग सुगम करता हूं.

राजूः देखा तूने विश्व कैसे चलता है और बनता है.

सतीशः ठीक है. पर गुरू से क्या संबंध है बताओ?

राजूः वही बताने जा रहा हूं. जब हम जैसे रहते है. गुरू हमें एक स्वरुप शिक्षा के द्वारा, सदगुणों को भरकर व्यक्तित्व का निर्माण करके देश को भेंट करता है. जैसे डाक्टर, इंजीनियर, मंत्री सब तरह के व्यक्तित्व का निर्माण करके देश को सजाने वाले निर्मात्रा है.

सतीशः तो ब्रम्ह स्वरूप ही है न?

राजूः हां ठीक है, जब शिक्षित व्यक्ति पाये हुए ज्ञान से सुगम और सुंदर जीवन बीताता है. दूसरों का उपकार करता है. देश का रक्षक भी बनता है. समझ में आया कि यह विष्णु का काम बन गया.

सतीशः अब महेश बनकर शिष्य का नाश कर देते है क्या?

राजूः अरे पगले! ऐसा नहीं, वह महेश्वर रूपी गुरु, शिष्य में रहने वाले दुगुर्णो का संहार करके उसका नव निर्माण करता है, व्यक्ति को नया रूप देकर विश्व को उपहार के रूप में देता है.

सतीशः तब तो तुमने ठीक कहा लेकिन गुरू भगवान से बढ़कर कैसे बनता है?

राजूः यह है कि हमें भगवान के बारे में सही रूप प्रस्तुत करने वाला गुरू ही है. अपने ज्ञान को हमको देकर रोशनी में भगवान का साक्षात्कार कराता है. गुरु इसलिए भगवान से बड़ा है. इसीलिए कवीर दास जी ने कहा है-'गुरू गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाँय बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।' भगवान और गुरू मेरे सामने खड़े हो तो पहले गुरू को नमन करना चाहिए जिसने हमें भगवान को दिखाया.

सतीशःमित्र आज तुमसे मैं एक अच्छी बात समझ लिया. चलो.

पूराना लोहा बेचो, टीन डब्बा बेचो, टूटे फूटे समान बेचो, प्लास्टिक के डिब्बे बेचो, रद्दी अखबार बेचो, उन पैसो से बैलेन्स डलवाके एसएमएस तो भेजो.

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

लड़का-तेरी जुदाई में नींद उड़ती है, चैन खोता है, जान जाती है, दिल रोता है. कुछ कुछ होता है.

लड़की-डॉक्टर को दिखा ले भैया स्वाइन फ्लू में ऐसा होता है....

जितेन्द्र सागर-८९५७१२४४९०

अभिन्नता

भिन्न भिन्न है वेश भूषा
भिन्न भिन्न जीवन की रीति,
मिट जाएगी हिंसा, नफरत
अगर हो जाये प्रीति।।
चंद प्रेम
बड़ी बड़ी बातों की चापलूसी
चाभी है कब्रखाने की
चंद प्रेम के आंसुओं से हम
पोंद सकते वेदना दिल की
जिंदगी और मंजिल
जिंदगी तो एक पहाड़ी सफर है
फिसल जाते हैं पैर
घुटन टेक तुम्हें रेंगना होगा
मंजिल है 'जाना ऊपर'!
कुछ करके नया दिखाना
हिसाब किताब करते करते
जिंदगी हुई गोला,
कुछ करके नया दिखाना ही
इन्सान है अनमोल।

✍हरिहर चौधरी, गंजाम, उड़ीसा

एक है वटवृक्ष

एक है वट-वृक्ष जिसकी छांव में जीवन पनपता है,
टहनियों में प्राण हो संचरण ज्यों बचपन सरसता है।
वे सुकोमल अंकुरित से अनगिनत पल्लव चमकते,
प्रस्फुटित लाखों करोड़ों पुष्प, बागों में दमकते,
सृष्टि की सहभागिता की आंच पा जी उछलता है।
एक है वट-वृक्ष जिसकी छांव में जीवन पनपता है।।

आदमी जो फूलता फलता सदा गतिमान रहता,
सार्थक वह जीव अपना भाग्य जो अनुमान करता,
जान लेता परिधि अपनी, आस्था के बीच चलता है।
एक है वट-वृक्ष जिसकी छांव में जीवन पनपता है।।

तोड़ने होंगे मिथक भ्रमजाल भी होंगे मिटाने,
बदलते परिवेश, देश, महेश की छवि को बनाने,
बेध पाये लक्ष्य वही नरेश जो गिरकर संभलता है।
एक है वट वृक्ष जिसकी छांव में जीवन पनपता है।।

✍ **डॉ० सुरेश प्रकाश शुक्ल,** सम्पादक-प्राची प्रतिभा मा०, लखनऊ,

ग़ज़ल

नज़र बचाकर, नज़र मिलाना, उनको आता है
नज़र मिलाकर, नज़र न आना, उनको आता है।
कभी रूठना, कभी रूलाना उनको आता है
वादा करके सदा भुलाना, उनको आता है।
नियम-उपनियम विधि-विधान की चर्चा क्या करना
सौगन्धों की राख उड़ाना, उनको आता है।
पहले मारे चोट, और फिर कुशल-क्षेम पूछें
हंस मुस्ककराकर गाज गिराना, उनको आता है।
इतिहासों की बात प्रेम के बदले प्रेम मिले
हृदय तोड़कर, दिल बहलाना, उनको आता है।
मन में बस कर चोरी करते फिर भी चोर नहीं कहलाते
चोरी करके आंख दिखाना, उनको आता है।
चलो चलें अब दूर चले इस माया नगरी से
मोड़ देखते ही मुड़ जाना, उनको आता है।
वो तो उजले धुले दूध से हंस मानसर के
मोती चुगकर फिर उड़ जाना, उनको आता है।

✍ **डॉ० इन्दिरा अग्रवाल,** अलीगढ़, उ०प्र०

राजस्थान, हरियाणा क्या?

वसुधा ही जिसका कुटुम्ब हो, राजस्थान, हरियाणा क्या?
दिल की भाषा सीख न पाया, हिन्दी और मलयालम क्या?
अपने को पहचान न पाया, मित्र और शत्रु फिर क्या?
कष्टों में ही हंसना सीखा, राष्ट्रप्रेमी रोना फिर क्या?
मृत्यु हमारी चिर प्रेयसी, जीवन से डरना फिर क्या?
वैभव को जो है ठुकराता, हानि और लाभ फिर क्या?
दुनिया से ही मोह न जिसको, छोटे-छोटे पद फिर क्या?
सत्य और ईमान हैं संगी, हार और जीत फिर क्या?
सलाह यहां पर मुफ़्त है मिलती, मुफ्त की चीज को मोल है क्या?
सभी वैद्य बन दवा बताते, माने मरीज, वह बचेगा क्या?
जो ज्ञान कर्म न बन पाये, बताओ बंधु अज्ञान फिर क्या?
कथनी और करनी में भिन्नता, राष्ट्रप्रेमी, वह इंसान है क्या?
धन-पद-यश-सम्बन्ध न बांधे, और बचा बन्धन फिर क्या?
कर्तव्य हमारा है निर्देशक, किसका? और आदेश फिर क्या?
जो अपने से डर न सका हो, बाहर का डर है फिर क्या?
चलना ही जीवन का पथ है, राष्ट्रप्रेमी घर है फिर क्या?
मिल जाए जिसको हमराही, और चाह रहती फिर क्या?
हमराही ही मिल न सका हो, करेगा चाह और फिर क्या?
जो अपने पर ढाल न पाया, उपदेश आपको देगा क्या?
कर्म ही जिसको, फल बन जाये, राष्ट्रप्रेमी डरना फिर क्या?
भ्रष्ट आचरण धन के पीछे, मृत्यु बाद करोगे क्या?
निज को भूल पल-पल खटते, विश्वास नहीं सन्तति पर क्या?
दुनिया को नहीं, खुद को सुधारो, दुनिया है दुनिया का क्या?
राष्ट्रप्रेमी जब आश नहीं है, होंगे हम निराश फिर क्या?

✍ **डॉ० सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी,** जींद, हरियाणा

किडः आंटी मम्मी ने एक कटोरी चीनी मांगी है.
आंटी (हंसते हुए)-अच्छा और क्या कहा है.
किडः कहा है अगर वो कुतिया ना दे तो शर्मा जी से ले आना

++++++++++++++++++++++++++++++++++

पतिः राजा दशरथ की ३ रानियां थी.
पत्नीः तो
पतिः तो मैं २ शादियां और कर सकता हूं
पत्नीः सोच लो द्रौपदी के ५ पति थे.
पतिः मैं मजाक कर रहा था यार।

जितेन्द्र कुमार ८९५७१२४४९०

✍ डॉ० वारिस अन्सारी

कुछ तो ज़ादे सफर ज़रूरी है
ज़िन्दगी है तो घर ज़रूरी है
आंख वाले तो है सभी लेकिन
आंख में भी नज़र ज़रूरी है
वर्ना ये जिस्म होगा बे मानी
अपने कांधे पे सर ज़रूरी है
बे सबब बोलने से क्या मतलब
बात हो तो असर ज़रूरी है
बे हुनर आदमी नहीं 'वारिस'
आदमी में हुनर ज़रूरी है।

✠ पट्‌टी शाह, फतेहपुर-२१२६५२, उ.प्र.

बसंत ऋतु आई है

शीतलता छोड़, रवि, रश्मि गरमाई है
अंग अंग मस्ती भर, डोली पुरवाई है
सतरंगी फूलों से, सज गई बगिया
कलियों पर, भृंगों की, टोली मंडराई है
सज गई बौरों से, अमुआ की डालियां
कोयलिया, कूक मधुर, चहुंदिशि गुंजाई है
लहराई खेतों में, गेहूं की बालियां
सरसों की पीरी, चूनर फहराई है
सेमल, पलाश अंग, भर आई लालिमा
टपक पड़े, महुआ वन, बिखरी मदिराई है
दर्पण निहार घनि, सजे नयन कजरा
खनकें कर कंगना, पग पायल छनकाई है
पनघट की राह पर, लटपट से पांव पड़े
कटि तट, धनिया के गागर छलकाई है
कण-कण में, धरती के सुषमा लुटाती हुई
बहारों की रानी, बसंत ऋतु आई है।

✍ **ठाकुर दास कुल्हारा**,
जबलपुर, म.प्र.

डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा का चिन्तन

चेहरे पर कई चेहरे
चढ़े हुए हैं
असल पर कई नकल
बढ़े हुए हैं

वे स्कूटर से गिरे
कपड़ों को संवारा
टूटी हड्डियों को
बाद मे निहारा

वे घर के बाहर
उंगलियों पर नचाते हैं
घर के भीतर
उंगलियों पर नाचते हैं।

बढ़ती आयु के साथ
मन को भी बढ़ाइये
तन भले ही शिथिल हो जाए
मन को ऊंचाइयों पर चढ़ाइये

✍ ग्वालियर, म.प्र.

डॉ० हमेचंद्र दुबे की कविताएँ

०१

अपने पार्श्व में
कई सपने हैं
फिर भी जहां में देखो
कितने अपने हैं
अपने सपने भी
साक्षात् पीड़ा है
कुछ पाने की
कुछ यश की, नाम की
सर्वत्र पीड़ा है
आदिम जाति की
अनूठी पीड़ा है
अखिल विश्व का
एक महान होना
उसका बीड़ा है।

०२

इस अखिल संसार में
मानव से बेहतर
और एक प्राणी
क्या खोज पाया है मनुष्य
चित्रांकन, निर्माण
यहां तक कि
मंदिर में भी
बनायी है उसने
अपनी हमशक्ल मूर्ति
उससे बाहर
ब्रह्मांड में/वह तिर सका
तो हवा की तरह
विचारों ही तरह
हवा का अंत नहीं/पड़ाव नहीं
केवल सृजन का साधन।

०३

हम सब
तुम सब
वे सब
एक समूह
समझ वालों का
ये सब
एक समूह
पशु भी सम्मिलित
एक जीव समूह
जीना कितने अर्थ देगा?

०४

जहां राजनीति
धर्म नीति बन जाए
कल्याण होगा
धर्म का सरल अर्थ
व्यर्थ नहीं, कल्याण है।

०५

मैं भूलता रहा उन सब को
मैं खाली हो गया
मैं कितना बोझिल था
कितना सरल, हल्का हो गया।

✍ बैजनाथ, बागेश्वर,उत्तराखंड

'चांद वाली राजकुमारी धरती पर उतरी'

जापान के सांस्कृतिक मास के उपलक्ष्य में इंडियन काउंसिल फार जैपनीज़ कल्चर के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर मं ओत्सुकिमि चंद्र दर्शन पर्व का आयोजन किया गया. जापान में हनामि-पुष्प दर्शन, युकिमि-हिम दर्शन का विशेष महत्व है. पुराने जमाने से ही पूर्णमासी के अवसर पर अभिजात्य वर्ग समवेत स्वर से चांद संबंधी कविता पढ़ता, विशेष प्रकार के व्यंजन खाता (त्सुकिमि मिठाई, घास और चारू स्रेह) रहा है. यह भी कहा जाता है कि हेइन काल से यह परंपरा चली आ रही है. ठीक उसी प्रकार जैसे भारत में यह माना जाता है कि युग युगांतरों से चांद पर बैठी काकी सूत कात रही है. भारतीय जनमानस यह सोचता है कि मन पर चांद इस कदर प्रभाव डालता है कि तनावग्रस्त मन भी खुशी से नाच उठता है. बाद में वह चांदी की कटोरी में खीर खाता है. जापानी अभिजात्यवर्ग शुक्ल पक्ष की हर सांझ को मनोरम बना देता है. चांद दिखाई दे या न दें, सुसुभि दावतों का आयोजन किया ही जाता हैं. यह भी कहा जाता है कि खरगोश चांद पर रह कर उछलते-कूदते रहते हैं. धरती पर रहने वाले खरगोश भी चांद पर जाना चाहते हैं.

चांद के पार नामक काव्य गोष्ठी का शुभांरभ राजदूत महामहिम हिदेअकि-दोमिचि के शुभकामना संदेश से हुआ. उसके बाद यजुर्वेद का जापानी अनुवाद और नागिरा का गिटार वादन नामी-गिरामी शिक्षा विदों, साहित्यकारों, पत्रकारों राजनयिकों की उपस्थिति में काव्य पाठ हुआ. एंदो नाओ, तोशियुकि आबे, डॉ० रामशरण गौड़ और दिनेश मिश्र की भाव धाराओं पर लिखित ६२ कविताओं का खूब रंग जमा. पत्रिका के संपादक डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी ने भी काव्य पाठक किया. चांद की खूबसूरत

छवियां स्क्रीन पर भी दिखाई दीं. मानयेशु, कोकिन वकारा, गेंजि मोनोजेतारि बाशो, उचिचमा कोजिरो होशिनों के अतिरिक्त रसखान, परमानंद दास, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की कविताओं का पाठ किया गया. जापान भारत के बीच सांस्कृतिक सेतु मानी जाने वाली डॉ० राजबुद्धिराजा की दो पुस्तकों 'चांद' और 'सफर की यादें' का जापान इनफारमेशन सेंटर के डायरेक्टर जनरल एदो नाओ ने लोकार्पण किया. यूरिको लोचन ने हनुमान चालीसा का पाठ कर खचाखच भरे हाल को मंत्रमुग्ध कर दिया. राज बुद्धिराजा ने भावपूर्ण एवं जीवंत संचालन किया.

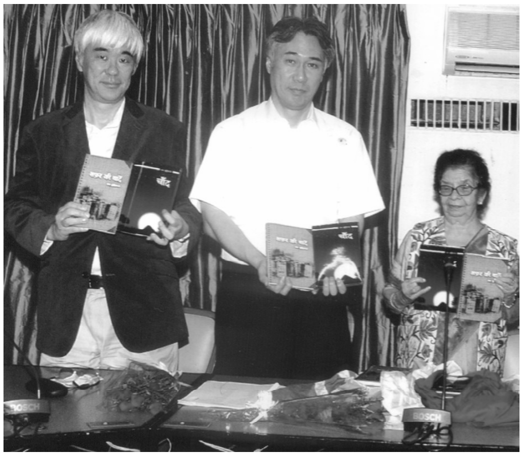

मान्यता है कि चांद की राजधानी सुयुकिनो मियाको से अंगूठे भर की कन्या-शिशु बांस की टहनी में आकर बैठ गई, जिसके बाल चांद की तरह चमकते थे. पिछले तीन वर्षो में इंडियन काउंसिल फॉर जैपनीज कल्चर ने हम पंछी एक डाल के, जापान-भारत के लोरी गीत, हिमालय की गोद में, मोमिजि के रंग जैसी अद्‌भूत पुस्तके भारतीय जापानी साहित्य को भेंट में दी है. जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ करेंगी.

शशि सुषमा की स्मृति साहित्यकार सम्मानित

कवि रामआसरे गोयल ने अपनी पत्नि शशि सुषमा की स्मृति पर एक कार्यक्रम आयोजित किया. जिसमें स्थानीय पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा १६ विद्यार्थियों को उच्चतम अंक प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर रामआसरे गोयल की पुस्तक 'स्वगंधे' का विमोचन हुआ तथा रिचा सूद, सुरेखा शर्मा व हरेन्द्र यादव ने समीक्षा की. काव्य पाठ में सुरेखा शर्मा, वीणा अग्रवाल, सरोज गुप्ता, कृष्ण लता यादव, फूलचंद सुमन, हरेन्द्र यादव, श्याम स्नेही, चैतन्य चेतन, डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी, शिवशंकर यजुर्वेदी, अलका वशिष्ठ, राजेश कौशिक, डॉ० मधु चतुर्वेदी, मधु मित्तल, उर्मिला सिनहा, रिचा सूद ने भाग लिया. कार्यक्रम का संचालन डॉ० राकेश अग्रवाल ने किया. कार्यक्रम के अंत में सभी कवियों को शाल व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया. आभार रामआसेर गोयल ने व्यक्त किया.

सुरेखा शर्मा को 'हिन्दी साहित्यकार' सम्मान

हरियाणा प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, गुड़गाव द्वारा आयोजित महामना पं. मदन मोहन मालवीय जयंती के अवसर पर हिन्दी अध्यापिका श्रीमती सुरेखा शर्मा को 'हिन्दी साहित्यकार सम्मान' से सम्मानित किया गया. यह सम्मान सम्मेलन के अध्यक्ष श्री फूलचदं जी 'सुमन', श्री धर्मपाल मैनी, श्री भीष्म भारद्वाज के सौजन्य से दिया गया.

डॉ० द्विवेदी को 'साहित्य-सौरभ'

पत्रिका के संपादक व सचिव-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान इलाहाबाद डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को शिव संकल्प साहित्य परिषद, नर्मदापुरम, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश द्वारा उनकी साहित्यिक सेवा के लिए 'साहित्य-सौरभ' की सम्मानोपाधि से शंकराचार्य जयन्ती २६ अप्रैल २०१२ को सम्मानित किया गया. सम्मानित किये जाने पर विजय लक्ष्मी विभा, ईश्वर शरण शुक्ल, श्रीमती जया, राजकिशोर भारती इत्यादि साहित्यकारों ने डॉ० द्विवेदी को बधाई दी तथा कृष्ण स्वरूप शर्मा 'मैथिलेन्द्र व पं. गिरिमोहन गुरू को सम्मानित करने के लिए धन्यवाद दिया.

शिवनारायण को विद्यावाचस्पति

छ.ग. शिक्षक साहित्यकार मंच के प्रदेशाध्यक्ष आचार्य शिव नारायण देवागंन 'आस' को विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, बिहार द्वारा हिन्दी साहित्य सेवा के लिए विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि से विभूषित किया है. सम्मानित किये जाने पर सुरेन्द्र साहू, जितेन्द्र निषाद, मनोज गुप्ता, रोहित साहु, अलका, श्रीमती दुर्गा देवांगन, गौतम आदि ने बधाई दी.

'दिव्य दृष्टि' विमोचित

बहुआयामी संस्था प्रेरणा द्वारा प्रकाशित और आचार्य शिवनारायण देवांगन द्वारा संपादित राष्ट्रीय साहित्य संकलन 'दिव्य दृष्टि' का विमोचन मुख्य अतिथि विजय बघेल, संसदीय सचिव गृह, जेल एवं सहकारिताा विभाग छत्तीसगढ़ के कर कमलों से किया गया.

कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्यकार श्री रामाधार शर्मा, विशेष अतिथि कमल वर्मा, श्री बी.पी.दूबे एवं आर.सी. मुदलियार थे. इस अवसर पर संकलन में शामिल साहित्यकारों रामाधार शर्मा, आर.सी.मुदलियार, मुकुंद रंजन राठौर, नारायण वर्मा, विसरूराम कुर्रे, बी.पी.दूबे, लखन लाल साहू, नरोत्तम वर्मा, संतराम वर्मा, अर्जुन पेड़ीडीहा, रामनारायण साहू, सुरेश साहू, ईला मुखोपाध्याय सहित १४० साहित्यकारों को सम्मानित किया गया. कार्यक्रम का संचालन आचार्य शिवनारायण देवांगन ने किया.

सत्यप्रिय केन्द्र सरकार द्वारा संचालित संस्थान में कार्यरत था. उसकी सच बोलने, ईमानदारी व निष्ठा से कार्य करने की आदत से उसका बॉस काफी परेशान था. सत्यप्रिय सत्य बोलने व ईमानदारी से कार्य करने के कारण निडर भी था और समय-समय पर अपने बॉस की अनियमित व संस्थान को हानि पहुंचाने वाली गतिविधियों की जानकारी उच्चाधिकारियों को देता रहता था. उसके सहकर्मी, उसका बॉस व उच्चाधिकारी कई बार व्यवहारिक बनने की सीख दे चुके थे, किन्तु वह चाहकर भी अपने को सुधार न पाया. अपनी कमियों सच बोलना, ईमानदारी व सत्यनिष्ठा से कार्य करना आदि को दूर न कर सका.

समय चक्र चलता रहा. वह विभाग का वरिष्ठतम कर्मचारी हो गया. संस्थान के नियमों के अनुसार चेकों पर हस्ताक्षर करना, भोजनालय भण्डार की देखभाल, विभिन्न अभिलेखों का प्रमाणन व बॉस की अनुपस्थिति में संस्थान का सुचारू संचालन उसके कर्त्तव्यों में समाहित हो गया. वह पूर्ण ईमानदारी व सत्यनिष्ठा के साथ अपने कर्त्तव्यों का निवर्हन करने लगा. उसका प्रत्येक निर्णय संस्थान के हित में होता. परिणाम स्वरूप भण्डार से होने वाली चोरी पर नियन्त्रण लगा. यहां तक कि भण्डार से जो सामग्री बॉस के यहां जाया करती थी, प्रत्यक्षतः बन्द हो गई. यह अलग बात थी कि कभी-कभी उसके सुनने में आया करता था कि भोजनालय मं कार्यरत कुछ कर्मचारी चोरी-छिपे खाद्य सामग्री बॉस के घर पहुंचाते हैं. उसके बावजूद सामान्य धारणा यह थी कि ७० प्रतिशत चोरी रूक गई है.

रविवार का दिन था. छुट्टी होने के कारण सत्यप्रिय प्रातः भ्रमण के लिए कुछ देर से निकला था. अपने

त्वरित सुनवाई?

आवास से निकलते ही उसकी दृष्टि दूर से ही मैस के दरवाजे से निकलते मेस कर्मचारी पर पड़ी, जिसके हाथ में थैला था. मेस कर्मचारी ने सत्यप्रिय को देखते ही थैला पास की झाड़ियों में छिपा दिया और टहलने लगा. सत्यप्रिय का शक यकीन में बदल गया और भ्रमण पर जाने की अपेक्षा वह उस कर्मचारी के पास गया और झाड़ी से थैला निकालकर स्टोरकीपर के पास ले गया था तथा दो-चार अन्य सहकर्मियों की उपस्थिति में थैले की तलाशी ली गई तो उसमें दूध की दो थैली निकलीं. पूछताछ करने पर मेस कर्मचारी ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि वह साहब के आदेश से साहब के घर दूध ा देने जा रहा था. सत्यप्रिय के सहकर्मियों ने उसे समझाया कि साहब के घर दूध ा देने जा रहा था. सत्यप्रिय के सहकर्मियों ने उसे समझाया कि साहब के घर पहले भी सामान जाता रहा है. उसके द्वारा उच्चाधिकारियों को शिकायत करने पर भी कोई कार्यवाही नहीं होगी. मेस कर्मचारी को वापस भेज दिया गया. सत्यप्रिय समझ गया, उनमें से कोई साक्षी नहीं बनेगा और वह मन मसोस कर घूमने चला गया.

दूसरे दिन जब वह कार्यालय पहुंचा तो उसके बॉस ने संभागीय कार्यालय से फैक्स द्वारा मंगाया गया निलम्बन आदेश थमाकर उसे कार्यमुक्त कर दिया. वह मुस्कराकर इस त्वरित कार्यवाही पर विचार करता हुआ अपने अगले गंतव्य के लिए चल पड़ा.

डॉ० सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी,
जींद, हरियाणा

समाजवाद

होली की संध्या पर सांस्कृतिक मंच द्वारा होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया था. इस समारोह में राज्य के संस्कृति मंत्री जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था. समारोह में लोगों की भारी उपस्थिति देख मंत्री जी गद-गद हो उठे. उन्होंने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए लोगों को होली की बधाई देते हुए कहा कि होली का दिन बड़े सौभाग्य का दिन है. आज के दिन न कोई छोटा है और न कोई बड़ा है. न कोई गरीब है और न कोई अमीर है. सबको होली खेलने का बराबर का अधिकार है. बस यही सच्चा समाजवाद है.

अपना भाषण समाप्त कर ज्योहिं मंत्री जी मंच से नीचे उतरकर अपनी सरकारी कार में बैठने लगे, तभी एक व्यक्ति ने मंत्री जी पर गुलाल फेंक दिया. मंत्री जी का कलफदार सफेद कुरता गुलाल के रंग में रंग गया. उस व्यक्ति की इस बेज़ा हरक़त पर मंत्री जी को बहुत गुस्सा आया और वे गुर्राकर बोले-

'बदतमीज, मेरे कपड़े खराब कर दिये. कुछ तो ख्याल किया होता बड़े-छोटे का.'

मंत्री जी की यह बात सुनकर, उपस्थित लोग यह नहीं समझ पा रहे थे कि मंत्री जी, मंच से फिर कौन से समाजवाद की बात कर रहे थे?

रोहित यादव, महेन्द्रगढ़, हरियाणा

नमस्कार, आज की ताजा खबर..........................
न्यूज पेपर में है
पढ़ लीजिए! गुड मार्निंग! ०८९५७१२४४९०

छुटा हुआ सामान

काव्य कृति 'छुटा हुआ सामान' चमेली जुगरान का काव्य संग्रह है. जिसे पराग बुक्स, गाजियाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया है. प्रस्तुत संग्रह का मूल्य मात्र एक सौ रुपये है जो इसकी साज सज्जा व मुद्रण कागज की गुणवत्ता के हिसाब से और सामान्यतः छपने वाले काव्य संग्रहों की तुलना बहुत ही कम है. ७२ पृष्ठीय इस संग्रह में कुल ७२ कविताएं हैं. 'हां आ रहा हूं मैं' से शुरू हुआ काव्य सफर 'यह भी सुख है' पर जाकर समाप्त होता है. नेपाली, हिन्दी, बांगला, स्वीडिश व अंग्रेजी की ज्ञाता चमेली जी की लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है.

प्रस्तुत संग्रह में भी जुगरान जी ने हिन्दी भाषा के प्रति पूरी निष्ठा के साथ सक्रिय योगदान दिया है. कवयित्री ने 'बारहवीं क्लास की लड़की' में बचपन के छुट जाने का जिक्र करते हुए कहा है-'क्यों हुए हम बड़े/क्या थी इतनी जल्दी/वो देखो छूट रहा है/बचपन मेरा प्यारा।

संगी-साथी झूले अंगना/ सूखे पत्तों जैसे/ बिखर जायेंगे हम/ मिलेंगे फिर कब, कहां?

'ऐसा तो था प्यार' में एक वृद्धा की कहानी को बयां करते हुए कहा है-

बेचारी वृद्धा! दिखाई नहीं देता/घूमने आई हैं।/दूसरे ने ताना मारा।

जाहिर है-प्यार होता ही है ऐसा/गिरे कोई तो..../चोट खाता है कोई और।

तो 'बड़े होते हुए' में बचपना को याद करते हुए कहा है-' वही ऊधम-कूद, नाच-गाना/बारिश में फिर भीग जाना/डाल-डाल मस्त लटकना/भरी दुपहरी रोज भटकना/लगाओ न नित नये बन्धन!

रूठने मनाने के चक्र का जिक्र करते हुए 'रूठने के बाद' में कहा है-

जरा-सी बात पर/रूठ जाते तुम/फिर संध्या को खुद ही/मनाने आते तुम। प्रिय ऐसा कौन-सा बन्धन/जो खिंच-खिंच आते तुम।

लड़कियों की कम होती संख्या पर कवयित्री ने लिखा है-कितनी बेरंग वीरान/होती दुनिया/ न होती अगर लड़किया!!/दीये दीवाली-सी जगर मगर/घर-आंगन रंगोली रचाती/ मोह-ममता की सौगात बांटे/तितली-सी

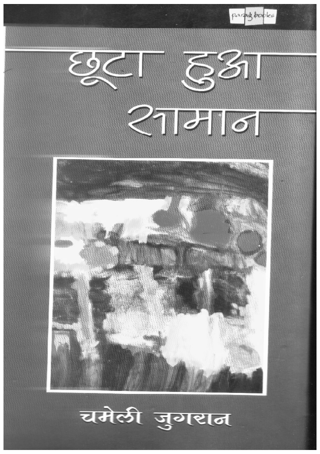

नाचती फरफराती/कितनी बेरंग वीरान/ होती दुनिया/ न होती अगर लड़किया। इनके अतिरिक्त 'मेरा हिस्सा', 'जाने वाला आया था', 'नया नाम दो', 'बीज की बात', 'हवा ही चाहिए तुम्हें', 'हम मिले', 'सुबह का अखबार', 'यह धड़कन' आदि रचनाएं भी अच्छी लगी. विशेषकर महिलाओं, प्रकृति, बचपन पर लिखी गई सभी कविताएं अच्छी बन पड़ी हैं. कवियित्री को हार्दिक बधाई.

व्यापार दिग्दर्शन

ब्रह्मर्षि वैद्य पं० नारायण शर्मा कौशिक उस व्यक्तित्व का नाम है जो आम आदमी को ज्योतिष जनपयोगी जानकारी प्रत्येक माह 'वेदांग ज्योति' के माध्यम से पहुंचाता रहता है. मुझे व्यक्तिगत रूप से ज्योतिष के बारे में बहुत सारी जानकारी इसी पत्रिका के माध्यम से मिली है. आप ज्योतिष संबंधी जनपयोगी जानकारी इतनी सरल भाषा में लिखते हैं कि उसको एक आदमी जो पढ़ा-लिखा है वो आसानी से समझ सकता है, जान सकता है. ऐसी कुछ जनपयोगी जानकारी को समाहित किए हुए उनके द्वारा लिखित 'व्यापार दिग्दर्शन' नामक वार्षिक पुस्तिका है. जिसमें मार्च २०१२ से अप्रैल २०१३ तक की विभिन्न प्रकार की जानकारियों को समाहित किए हुए हैं. इसमें राजादि फलविचार, शुभ कार्यो के लिए समय व वर्जित शुभ कार्यो के लिए तिथिवार विवरण, राशिफल, माहवाद व्यापारिक मंदी-तेजी का आकड़ा, वस्तु के आधार पर मंदी-तेजी आदि विवरण समाहित है. इस पुस्तक को वेदांग ज्योति प्रकाशन, सारड़ा बाजार, मेढ़ता सीटी, राजस्थान द्वारा प्रकाशित किया गया हैं. इसका मूल्य २५०/ हैं.

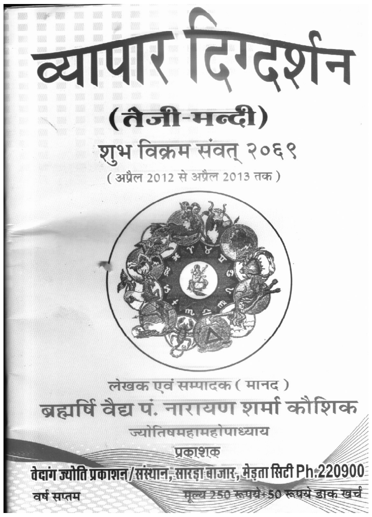

लेखक को पत्रिका परिवार की तरफ से बधाई.

बारह मास बसंत

काव्य कृति बारह मास वसंत के डॉ० लक्ष्मी नारायण बुनकर का आकर्षक व आल्हादित शीर्षक से पुष्पित एवं सुरभित काव्य कुंज है. प्रस्तुत काव्य संग्रह में रचनाकार ने आत्म कथ्य के माध्यम से अपने साहित्यिक उत्कर्ष की कथा व्यथा की प्रस्तुती की है. वंसत ऋतु की प्राकृतिक छटा रतिक्रीर्ति की संचारक होती है, किंतु रचनाकार के द्वारा काव्य संग्रह में प्राकृतिक उपमानों को आदर्श जीवन के प्रतीकात्मक अपनी कविता में निरूपित किया गया है. कृति को आमूख करते हूए सुमन मुस्कान में अनुपम आदर्श की अभिव्यक्ति की गई हैं:-**काम तेरा है सदा ही. प्रेम से सबको सजाना/दूसरो को मान देना. और खुद भी मान पाना.**

काव्य कृति में कविता किसी ऋतु की आश्रित नहीं है. मन का उल्लास और आल्हादित प्रसंग. बसंतेतर वरखा ऋतु मे भी 'वासंती' अनुभूति कराते हैं.

देख छटा ऐसी वरखा की. मेरा मन हिलोर लेता हैं।/सबके मन भावन कोमल से, शब्द सुमन विखेर देता है''

काव्य संग्रह में रचनाकार की प्रणयानुभूति रचनाओं के माध्यम से सहज ही संकोच शून्य प्रगट हुई है. कहीं मिलन की चाह तो कहीं विरह की पीड़ा को अभिव्यक्त करती कविताएं 'प्रियदर्षिनी', 'इन्द्रपरी'. श्बारह मास वसंत', अगर नहीं आते तुम;' 'एक तुम्ही तो हो'; के अलावा वासंती मौसम, वसंत वहार, पावस परी, यह कैसा मधुमास, दर-दर भटक रहा हूँ, और मैं तेरा राजा हूँ;' में व्यक्त प्रणय प्रंसगो की अनुभूत भावाभिव्यक्ति के द्वारा यही तो आभास होता है।

बुनकर ने 'यह बसंत की बेला' के माध यम से सामाजिक जीवन में व्याप्त क्रूरता एवं आतंकवादी शोर शरावे पर प्रहार करते हुए ही कोयल की निस्तब्ध ाता के साथ अपना आक्रोश प्रगट किया है-'शोर नहीं होता तो कोयल मीठे गाने गातीं''

कतिपय कविताओं में कृतिकार की निष्ठावान समर्पित एवं स्नेहजनित राष्ट्रीय भावना की प्रज्ञ अभिव्यक्ति उसकी राष्ट्र परायणता की ध्योतक हैं. संग्रह में संगृहीत कविता 'प्यारा हिन्दुस्तान रहे' में समाहित उदगार मानो 'बुनकर वाणी' के रूप में प्रस्फुटित हुए हैं. इस कविता में कवि का सजग एवं सार्थक कवित्व जाग्रत हुआ है:-

सूर्य चंद्र तारागण नभ में और धरा पर घान रहे।/ खुशियों से भरपूर हमारा प्यारा हिन्दुस्तान रहे।'

डॉ. बुनकर की काव्यकृति में प्रकाशित कविताओ में जब हम नवचेतना, जाग समय की मांग, रमता जोगी, जीवन चलता हैं अविराम, दिलदार तु ही हैं, मैं कठिन राह का राही, तथा अन्य कविताओ व्यर्थ तुम्हारा जीवन, ऐसा ज्ञान दिया, क्या मंदिर क्या मस्जिद में व्यक्त अध्यात्म एवं दर्शन का आवाहन करते हैं, तो उनकी प्रज्ञ काव्य प्रतिभा में कबीर का चिंतन मानो उनके माध यम से परछाई बनकर प्रगट हुआ हैं, ऐसा प्रतीत होता है.

डॉ बुनकर आज के कबीर है, उनकी कविता और अधिक परिष्कृत होकर भविष्य में 'बुनकर वाणी के रूप' में साहित्य जगत को गौरवान्वित करेगी। निसंदेह वे गुदडी के लाल हैं, प्रतिभा डनलप के गद्‌दों में नहीं गुदड़ी में छुपी आती हैं।

समीक्षकः डॉ. महेष बोहरे

दिव्य दृष्टि

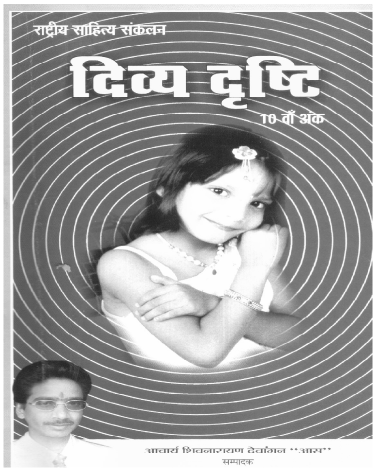

राष्ट्रीय काव्य संकलन 'दिव्य दृष्टि' आचार्य शिवनारायण देवांगन 'आस' का १०वां सम्पादकीय प्रयास है. १२८ पृष्ठीय इस संकलन में कुल १०० रचनाकारों को समाहित किया गया है. जिसमें अधिकतर रचनाकार तो नामात्र के देखने व पढ़ने को मिले हैं. हां कुछ अक्सर पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं के माध्यम से दिख जाने वाले रचनाकार भी है जैसे डॉ० महेश चन्द्र शर्मा, डॉ० तारा सिंह, प्रेमिला भारद्वाज, डॉ० प्रेम सिंह चेतन, मुखराम माकड़ 'माहिर', अनोखी लाल कोठारी, डॉ० वली उल्लाह खां 'फरोग', डॉ० नलिनी विभा 'नाज़ली', राम सहाय बरैया, पं० मुकेश चतुर्वेदी समीर, मृदुल मोहन अवधिया, डॉ० हितेश कुमार शर्मा, डा० बी.पी.मिश्र 'अतीत', सुरेश चन्द्र सर्वहारा, राम आर्य व्यथित, दामोदर जोशी, प्रकाश सूना, रमेशा चन्द्र त्रिवेदी, इला मुखोपाध याय, उधो राम चन्द्र निहा आदि. कुछ नये रचनाकारों ने भी अच्छा प्रयास किया है. सभी रचनाकारों व दिव्य दृष्टि परिवार की हार्दिक बधाई. मुद्रित मूल्य-१२१रुपये